মূলাঃ—অগ্রিন বার্ষিক দা। , ডাক মাহল ১।। , ষামাসিক ৪৮০, ডাক মাগুল ৮০, ত্রেমাসিক ৩; ডাক মাগুল। ১০ আনা। অন্ত্রিম বার্ষিক ২০।। ত, ডাক আহল ১।। প্রতি গও । ১০ আনা। বিজ্ঞাপন প্রকাশের মূলাঃ – প্রতি পংক্তি, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চতুর্থ ও ত্তাধিকবার ১০ আনা। ইংরেজী প্রতি পংক্তি । আনা

३३० जागा

किनका छ।: - ১१३ कान छ। - वृश्ला छिवा व, मन ১२৮८ मान।

हे॰ २५८म एक क्यांति।

১৮१४ शृः अस्।

> ७ मश्शा।

তামতর্দা॥

मर्कि शिउमी शवम काक शिक अक नन्नामी इहेट था थ

- यदश्यभा

इंश (कवल कडकछलि (मणी अ कडक छलिन श्वर्व छ वा विश्व विश्व मः द्या द्या तम श्रमु इहेरा। গ্রমন অসাধারণ বহুবিধ রোগনাশক শক্তি ধারণ क्रिशार्ड, (य अयुड तम डेशाधिरड প্রতিষ্ঠিত इইয়া बाखिक जिल कार्या कि बिंड मगर्थ। कि गर्छी न्यां अध्या त्रक, लडा, वली প্রভৃতি वनम्भতिতে विश्वः व्यक्षे। (य कि ठग॰कात छ। धनान कतिया एइन डाइात निछा गर्मा (लाक मनिश्य विभिन्न थाकिल वार्थि-यन्ति यानव (पर्क नाना श्रेकांत्र (तार्गत यञ्जना मीर्च काल महा कतिएंड इहेड ना, এवर अकाल कालित वल इइटिड इइड ना।

. जाशतक जागृ ज तम कि ठम कात छेषध। इंश (मयत्न ञात्नक ञात्नक इःमाधा, ककेमाधा ও ञामाधा (त्रांश अ मान्डि इरेट (एथ। शिय़ा ছে। এयन कि क्य़, यक्ता, मून उ वङ्विध मीत्री ए।, ऋ जागं, शामकानं, হদকম্প, অমপত্ত অম-শূল, পুরাতন জ্বর, প্রমেহ, यश्यातिज्ञत, छेপদংশ পারদ ঘটীত দোষ, মুতকুছ, वल्यूब, तक्किवकात, श्लीश, भाख, यक् अक् अधिनी প্রভাত সকল প্রকার রোগ প্রতিকারে ইহা উৎকৃষ্ট। खीलाकिपिरगत कडकछिलिन विस्थिष तार्थ आहि, এই ঔষধ তাহার শীঘ্র প্রতিকারক। স্থতিকা, প্রদর, म छून, जिंकिक (क्षांग, अक्ष जमन्नि, প্रভৃতি রোগে (य यथानियाप छेषध (मयन क्रिज़िल यूजवःमा (मायछ थाकित्व ना। शत्क अग्रज निर्द्धाव छेवध (य इक्र शोध) শिশুর ও দেবা এবং পরমোপকারী।

উদাসীনের দত্ত আমার এই মহৌষধ ইংরাজি১৮৬৮ मान इहेट थाता इहेशाइ। जागात थकारण त शत (ष कड़ इंश्त नकल इंड्ल डाश्त रंग्रडा नारे।

প্রত্যেক শেশর অগ্রিম মুল্য ৫॥० টাকা। डाक्या छल आनाज > होका। वार्तिः वा द्रिष अकरे गाउन।

उला देश बाज्या कर्या वारमांच वरिका।

मकल প্रकात छिष्य जार्थका अहे छेष (धत हम्ध-कात खन थका म इहेतारह, हेश हाउ। जाङ जन्म , मग(य्रव म(श्रा (त्राशं निवात्तन रय। जिनकार्न (लाक व । ७ घन्छे । यद्या व्याद्राभा इक्साइल्म। भाउकता २० জन तागीत अधिक आतागा इहेबादह। इंश ङालिका এवर मार्ट्व लार्कित शेव हाता थ्रमान भा उरा शिया छ ।

এই উषध्यत ७० शक्षाण यहिकात मूला डाकमाश्चन वार्ष अञ्चान ६ छोका याज, इश हाता २० जन त्राभी कार्तभाग इहेट शद्र ।

(य म्य खादाशा भगानंत्र मर्कनाई । तिम्रा थाटक जारा अकटन अकान कतिएज (गाल (कनन नाइना

याज। এজনা তাহার यक्षा আবশাকীয় কয়েক খানি न दम थका न कता या इ (७ ए ।

> बी:इमाज्या व त्यां भाषा । মিশির পোখরা, বেনারস।

মহাশায়ের ২ শিশি তামূত্রস সেবন করিয়া (ताशीत प्रिकालिन जुत्र, श्लीरा अकानी श्रञ्ज किन किर्वित द्रांश मन्भू न जादांशा ३ इताद्य । मदानद्यत ञागृङत्रामत छ। (पिथिया हम कु इ इलाग कात्र। ऐक (त्रांशीक जाना वाक्रि मक्ल এक थकात जना व पिशां ছिल्नम, किन्छ जार्थनात जम् इत्रम এक मिनि मि तम्बन कबाई(उई क्षांय जाद्रांगा लाज कद्र। विजीय लिलि (मवन कि त्रा मन्मे न जार्ताशा अ मवन इहेता ए ।

बीतायनातायन मारा अवर (कार,

निष्ठ रमिष्टिकल इल जागनशूत्र।

আমি ৪ শিশি অমূত্রস আনিয়াছিলাম তাহার यद्या अक लिलि जी गांज मांजू नानी कि स्मान करां नरंज डाँश्रात मृष्ट्री, गांव मांश, नातीत प्रविन्छ। अ नाना थकात (त्रांश আরোগ্য इहेशाइ পুনরায় আর এক শিশি সেবন कतिएक जात्र क कि सार्हिन। यहां गंस! जाशनांत्र अहे ञ्यू उद्रम नागक मदशेषद्धत छन এक मूर्थ नाज क्त्रिट जिक्स्म।

मानाशूत क दलत मिडीय मिकक बीयुक वातू नन्मलान छछ মহাশর ভাঁহার মাতুলের কারণ এক অত্যাশ্চার্যা छ। পরীক্ষিত হইয়াছে। শিশি অমূত্রস আন ইয়া সেবন করানতে তাঁহার याजुल यश्राण्य विश्विष आदिशा लाज कतिया हिन।

জী অমূত লাল ঘোষ,

माना न्त्र। जािंग क्या जम्डतम । किलिंग जानाई सा धकजन कुछ (ताशी खा दाशी का नार्या का तान द डे क

(ताशीत जालक डेशकात इहेग्राट्य! গ্রীচন্দ্র কুমার চক্রবর্তী,

প্রেত্মন্দার, আসাম।

जाशि विशंज यर्धि क्यांशंज 8 वा जिन जना जर्म রোগের এবং একটা সম্ভান্ত জীলোকের কারণ অমূত্রস व्यानाईशाहिलाम डाँहारा डियथ (मद्यान व्यान्हरी कार्श वाद्वाभा इहेबाढ्ना खाटमाक नित्र श्री ७ नि मखान इहेग्रा ७ जित्र २५हे अक यान वर्जयांन शाकिता, जाशत একটীর জম্ম মাত্র,মৃত্যু হইয়াছিল। অমৃতর্ম সেবনের পরই তাঁছার গতে একটা কন্য। मন্তান জ বায়। এপর্যান্ত वर्जमान जाए हा अ भारमत इहेशाइ जाहारक जान (मथा यात्र अगु उत्रम (य एम ९क त छे वध छ। हा छ। न क्रा र्हें आर्ट् ।

बीनम किटमात मज, नाजीत, - नडगै। जामाग।

আমার একজন বন্ধ অনেক দিন হইতে ভগান্দর अ शूराउन जार करें भादेर कि कि लिन । जिन देखा जम देवना अ जाकात घाता हिकिश्मा कतारेय हिटलम किन তাহাতে রোগের কিছুমাত উপশ্য ন। হওয়ায় তিনি जीवन जाना পরিতাগ করিয়। উষধ দেবনে একে বারে वित्र छ इहेग्रा छिट्नन। छाप्या य छाम् छत्म (मवन क्रांट्ड डेलम क्रश जारिकोशी लाड कि कि ब्राट्डन ।

> जिलि ठिस विद्यांग क्रमानीश्रव, क्लिकां ।

আমার পড়ীর স্তিকার গীড়ার জন্য যে অমূতর পোরণ করিয়া ছিলেন ভাহাতে বিশেষ উপকার হয় शाद्य।

खी । ज कूगांत (घाषान भीगल। विनिकाछ।।

অভি আহল দের সহিত জালাইতেছি যে আমি এक छी वक् भाषीत अङ् थामत भी छ। इहेशा व्यक्तिभाश कर ভোগ किति डिहिट लग अयम कि मय (यमय । किया जिले ल्गिनिज निर्म ड इडेज (यं जाइ। पिशिया इज्जान इडेए) इहेड। अहे अन्हाटि डाउना त उरेनमा कितः मा कत इटि क्रिकी कर्ता यात्र नाई। व्यवस्थित महाभारमञ्जू क्रिश् विथा । ज जर्जन मा जीवभी र लिलि जाना हेश। किছू जि नानकात कतात्र निक्छत मन्भ न जाद्राक्षा कहेत्राह महां भारत मार्क्ष अध्यत जाशित जीम छन (मिथिता जामा वक् अ अथानकात मकदल हमश्कृ इहेगार्ड । आभा युक्त कर्ष जागिष्यद्वत्र निक्छे थार्थना क्रित्डिछ ए महानाश नी घं जी वि इहेशा अहे का छ । क प्रा निश्व खं থাকুন।

खीवांथांन माम ठक्व वर्षी हिडमाधनी मङात मणापक नानमान (कना वर्षमान আপনার অমূত্রস এক শিশি আমার জনন 'कू बा भी कि (मवन क बा न जिन जिन जिन जिने र्रेड्डेट गुक्त इहेश (इन। जाहाट इ वाशनाब जा जब

> बीग इमठ छ । छ। छ। छ। एड (भाः माः शकात्रभगभूत, (जना मिनाजभूत।

आशि जुव उका गीत याताय गर्भतामां उ शाहे ङ जिनाय अदनक छो छोत्र को का अदेवाग छ। यो ना श्रकात हिकि श्रमा क्राइमा किष्ट्र के बार्मामा ना इल्म ञ्चरणाय महामारग्र जगिषिथा। ज ज्यम्बरम जन मि। कानाहेश। (ग्रनम कर्ता (७ हश्कात कार्ताभा क्या हि

国で一

भीटल आग, (जाला इशनी।

जाशनाव महिश्विष अम्डतम प्रे लिलि जानारी वागांत मखान(क (मनन कत्।न क अरेश अ खेन क यालीन निवादन इहेशाएए। धना आशानात अबुडदम्। बीगध्यम् नन अधा (ठीध्री

जभीमां ब कु छो, द जला व म भूद।

यागात शिषाठाक्त वाजीव कछनात्रक छ था नागक आहिगी द्वारम जाका उ इ अया त त्वनीय हिकि मकिपिटगांत छोता व्यर्गभिनी, शक्काम अ शंगांधयूना थाकृषि कर्यक थाकात लेवश धार धारिनी शिक्ति है। প্রস্তুত করাইয়া দোবন ও মর্দন করণান্তর রোগোর কো श्मना रहेशो नत्र इकि लाख रहे जना निन। मन ल्यादि व्याणानां व्यञ्ज्यम ० मिलि वानां हेश। स् क्राइग्राहिलांग डाइग्रड डिन डेडग को जार्तांगा ला করিয়াছেন।

बिनेगानहस म्थाभाष वाँ निष्ठिश (जना वात्नश्र ।

यहां लेट्यंत्र निक्छे हहेट अक लिलि ज्य हा जान हेशां डाहार्ड विर्णंय डेशकृड हरेशाहि। डेड बेयथ अव श्विका शीषात्र नावकात कहा हहा जाकाटक द्राभी ऐत क्षण काद्वाभा लांक कि बिबाएक गा

> **बिहात मग्राम (होर्न्डी** डिकड मारा (जना नहंगाव

गशालात गर्शिष छा छा छा नि यिनि स्नियन कित-मिट्लि मकल्वि ज्ञान तक्षे व्याद्वां भा लां क क्रियां हम । बी लिकिनार्थ माम वस्र क छेक ।

व्यागात किनिष्ठ ड्रांडांत्र भूवांडन ख्रत, श्रीशं, जकि डेमद्रागग अ गूर्थ घा इहेगा अधिककाल कछ (ভाগ कतिएकिल अवर छे छ यो जग देवला अ छा छा त (मधान इई-शां जिल किन्छ कि जूर उन्ने छे भाग इय नाई। जावर भार्ष यदानार्यत अपृष्ठतम आनाहेग्रा (मनन क्ताहेग्रा ज्लाग णाशांड आद्वांगा लांड क्रिया सम्ब ७ सूत्री रहेबाद् ।

बीवाथान माम ठकवर्डी

विज्ञाधनी मजात मन्नापक।

ञाशनात अञ्डतमत्र कि अनिक्रिनोग्न छन। इंडि शद्य जेमुग गदशभकाती छेष्ठध्यत व्यानिकात (मथा यात्र नाई। व्यामि (य এक निनि ज्ञ ज्ञ ज्ञ ज्ञान क्रिया-किलाय जाशास्त्र कार्तामा लाज कत्रियाहि। ज्यमा किति यो गता ना ना विश्व द्वार्थ यञ्चन। (ভाগ कित्रि एक्न विश्वा छेलिथिङ खेषध (भवत्न कमां वित्र के ना इन।

बी श्रां क क्या माम

काशिय वाजात्र वहत्रमधूत्र।

व्यामात शिकाठाकूत महालग्न वाक वाश्वि, वाक द्वाध कडेग्रा नागागंड, वाहन अ वानगंक हिएनन, वाशनाद विद्वहना इडेशांट्ड.।

> वीनवीन उत्ता उत्ता वि वामगञ्ज न अवाथानि क्रनाचेठात्र वर्णिका।

वाशनात निक्छे इहेट्ड (य ३० होकात उनार्डिशत डेयथ जाना हेया हिलाग जारा निः लिखिङ इहेया हि এवं मरे भगूमम जिकाबरे कल भारमाहि जर्था मगूमम वाभी हे न्यायाय हहेग्राहा।

> बीत्रमणी काख ताश माम्हा गालिकशास्त्र।

जाशनात्र निकंदे इहेट आधि कत्मत्रात्र शिन आना-(मा आम ৯ वे जन (वागी जादवागा कविमाहि।

> क्यात्र बिक्य (गार्भान वाध्या यमित्राठा त्राजवाणी इर्गाश्वरा CHOLERA-PILL.

I have very great pleasure in informing you hat your cholera pills have been a great boon those infected with cholera. I tried them in cases in all of which they were successful ept in 5 or 6 cases.

C. W. Richardson Chairman Satara Municipality.

I am requested by the Moharaja of Burdwan to nform you that during the recent outbreak of cholera in this place, your pills were tried in several cases, which occurred among the servants of His Highness and were found to be efficacious.

T. B. Miller Private Secretary.

being able to testify to I am happy in the general efficacy of your cholera pills, they having proved superior to all allopathic medicines in cholera cases.

Haran Chandra Chatterji Hd. Master Nowgong school Nowgong, Assam.

I am exceedingly glad in informing you that your cholera pills were administered in 10 cases with successful results.

> D. S. Gholker S. N. G. Library, Kothapore Southern Maratha country.

I have much pleasure to inform you that Juring the present outbreak of cholera here have been able to cure several cases without my failure by the use of the said pills, Tarinee Prosad

Pleader,

Judge's Court, Bhagulpore

I am much indebted to you for your cholera ills. I have administered them in upwards of acases in which I found it to be most effcacious IdeI confidently say that they the best re-Wy for the epidemic. In fact they have t the cases in

probably on account of the advanced state of the disease.

Anna Gopal, Tanna. AMRITARASSA.

Amritarassa has really a wonderful efficacy over Hysteria. Since the administration of the Amrita my wife had had no fit,

> Suresh Chander Ghose Asst. Surgron, Rurkee,

My sister who was suffering from chronic Dyspepsia and Dysentry for a long time, has greatly benefited by the use of one phial of your valuable Amritarassa.

> Jogendra Chander Bose Pleader, Ludhiana,

The phial of your Amritarassa that you sent me has perfectly cured me of Dyspepsia and Diarrhœa I gave a little of it to a Mr Burnham of our office for his old fever and ague; and he having recovered, desires me to write for one phial more.

Gopal Chander Gangooly Foreign department Simla Hill

NEW AMALGAMATED SOCIETY OF RAILWAY SERVANTS IN INDIA:

REGISTERED UNDER ACT XXI OF 1860 HEAD OFFICE ALLAHABAD.

The above Society has been established for the purpose of carrying out the following objects.

The improvement of the general condition of Railway servants in India. To afford assistance to its members when thrown out of employment. To provide legal support for its members and also render them assistance in cases of sickness. It likewise affords a superannuation allowance to old, or disabled members, and will promote such undertakings as will conduce to the improvement of the Railway service generally. In addition to the above the relatives of a deceased member, not in arrear with his subscriptions at the time of his death, are entitled to the sum of Rs. 250, Rs. 150, or Rs. 75 according to the class of subscribers the deceased member may have belonged to. There is also a Death Benefit Fund attached to the Society and on the death of any member belonging to the Fund his nominee will receive one quarter the amount there is in the Fund.

ANY Railway employee, whatever his caste, creed, or nationality, is eligible for membership in the Society, providing he is a sober, steady, industrious man who understands his work, and can read, and write. The following are the fees payable by members.

Monthly subscription On joining, including 1st month's Subscription payable in advance. and cost of rule book.

Rs. Ans. P. Ans. P. Class A. 12

And an annual assessment payable in January for all classes of eight annas per member, to revert exclusively to a Delegate Meeting Fund.

The Society is established on most of the Indian Railways, and possesses a journal of its own in which are published the proceedings of the various meetings that are held.

For further information apply to any of the Branch Secretaries or to

> F. T. ATKINS General Secretary New Amalgamated Society of Railway Servants in India, Allahabad.

क्ष जूक युका।

ल्यकाशिक इरेग़ाइ। श्वाक्षतकात्रीश्व मृना ७ जाक या ७ । वाना रिमार्व श्रीशिरेल श्रुक शारेर्व । उनः मिर्जाशूत ही है था ठाशह मजूममातः , ১०६नः मङ्गा-श्री हो है यरश्नातल टिलेमिक ; एएमः कार्लिक ही है क्रानिः लाइ खिती यादिश्निष्ठ वत्नाश्रीभागाः । अ विथिनिया मांशां हि भारे भारे वा श्रकादत निक है था थवा।

मृना > छोका छाक माखन /॰ ञाना माछ।

शायांन शिविया।

(ঐতিহাদিক দৃশ্য-কাব্য।)

छीरशाशानहन् मूरथाशाशाश थनी छन

किनकां का, भाष्टिन छात्राय, मश्कृ क यद्यत भूखकां नहा, कानिः नारदातिष्ठ, हीनावाजात श्रमहन् नारथत माकारन धवः হোগল दुँ छियाय मः वाम প্রভাকর কার্যা-न स्य शहकाद विक्रिका था था । म्ला भ भक्ष

শীযুক্ত বাবু কালী প্রসন্ন ঘোষ প্রণীত "প্রভাত िछ।" এবং ভীযুক্ত বাবু আনন্দচন্দ্র মিত্র প্রণী च्रे " (इत्लामा कावा, व्यथमथ ७ ' উভয়ের পরিবর্ত্তিত, পরি-শোধিত এবং পরিবর্দ্ধিত সটিক নূতন সংস্করণ (যাহ यागामी ছाত্রবত্তি পরীকার জন্য পূর্বে বঙ্গ বিভাগের স্কুল ममृद्दत জना পाठा निर्सािठ इरेग़ाए, ७ এতত্ত্রের मत्रल वाशिश " ঢाका, পটুয়ाটুলী, २७ । २१ नং ভবন कावा श्रकाम नारेखितीएंगरे, कि, मि, वस्र এए कार দারা বিক্রিত হইতেছে।

উक्ত नारेखितीए ছांच वृज्जित পाठा ममूमम পুসক এवः প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ গ্রন্থকার দিগের গ্রন্থাদি — কাব্য, नां हेक. डेशनां म, नवनां म, हित्र होशां न उ त्र मां मि उ---मिशदक यदथा शयुक कियमन (म उया इया नगम मृना मह ডांक माञ्चल এवः পেकिः थत्र । পाঠाই ल अ जि यद्वत महिज विष्मित्न श्रुक পाठा हैवात अ अ जि स्वत्नाव अ कता इहे-याद्य ।

यरथां পयू क कियमन পाই ल অতি य ज़ त मिर्ड छे क लाईखिहीएछ विष्मणीय श्रञ्कात्वर्णत श्रुक विक्यार्थ গচ্ছিত রাখা হয়।

विन दामि अभाशिक कांत्रमि। अनः आशात मात्रकूलात त्वांछ, किनकां ।

विथान मकन श्रकांत हामिष्ठभाषिक देवध, देश्तांकि । वाकना वावश्रा भूखक, अयथ भूर्व नाना थका त शृह हिकि एमात्र वाक म এवः हिकि ९ मक ७ পथिकिपिशित माथ नेहेंग्री विछाईवात व्यक्ति भोगिषा विलाङ इख्या यात्र।

गुर हिकिৎमात खलाउँठात वाक म मरमञ वावशा भूखक।

२८ मिमि ३० छोका। ३२ लिलि व ढोका ३ ढोका। ক্যাক্ষার পरकं किम मिमि ३२ २८ ७० ७५ ७०

कुष विगितांत माम् वावशा श्रुक १ ३२ ३० " २७ ३ छाम निनि

२ जाम निनि विना श्रुक लालिकाति भिज এवः काः,

হোঃ চিকিৎসক ও কেমিষ্ট।

NOTICE.

工 会员 学 高 の で る の 3

ञाञ्च वोकांत পত্ৰিका।

मन>२৮८ माल, ১१ই ফাল্ গুণ, বৃহস্পতিবার।

विधाछ। कि পाष्ट्र इंश इंडेल ।

১৫ वर्भत शूर्ख यिनि ठाकनश इरेड जिने (यार्भ কলিকাতায় আগমন করিয়াছেন, তাহার হয় ত স্থারণ णाष्ट्र एय जथन जाशित्रशीत छेज्य ज छित कि मरनार्त শোভা ছিল। উভয় তট ইষ্টক নির্দ্মিত ঘাটে পরিপূর্ণ विरः लेखाक शान लिक फिन स्यापित स्रेवां स्रेवां रुरेट स्यांटिखन शन श्यांख लाक शनिशृर् थाकिछ। सान, शृषा, वाग प्रवन প্रভৃতি উপলক্ষে এখানে কত লোকেরই मगांशग रहेण, कण वांलक, तृक्ष, यूवा, खी, शूक्ष এक এक श्रात्न मगदवं इहेश गत्नत अमीम आनत्म कं छेझामहे প্রকাশ করিত। হিন্দু ধর্মপরায়ণ ব্যক্তিরা ভক্তিরদে शम शम इरेशा पूरे रुख तानिर शुल्भाञ्जलि मिर्टिष्न, এवः नाना वर्ष बङ्खिक काभीदित ভाসমান পুष्পीमादित नाग्य गन्नात वक्रः इन जलिकिक ल्यां जा शांत्र कतिराज्य । वाल दिन्त क्रा क्रिया ज्ञा क उठे इहेट जा नित्थी नीत्र याला প्रामान क्रिएएছে, ज्यापा मन्बक रहेशा भीत्नत नाम भनात वकः इत्न वनिक्रिनीय উल्लामित গাত गार्जन कतिराज्छन এवः তাহাদের निर्मान, উৎकर्श-শूना পবিত্র হৃদয় হইতে অবিশ্রান্ত আনন্দ স্রোত বিনির্গত হইয়া বায়, রাশিতে আনন্দ তরঙ্গ উঠাইতেছে, অথবা তাহারা কক্ষে কলদীধারণ করিয়া বিত্যুৎমালার ন্যায় শ্রেণী-वक्त इहेशा গমন করিতেছেন ও জগতবাদীরা হিন্দু মহিলা-मिरा स सवा लगि जि, मल ज्ज जा व पिशा प्रभ क् क इहेर ज एक । এक मिन এই সমুদয় স্থান এক রূপ দেব ছল্ল ভ ও অনুপম जानत्मत श्रांन ছिल। जाशित्थी उत्धिक स्थाजिज অট্টালিকা, কত অলৌ किक পুপোদ্যান, কত লোকের ञावामञ्चान, कञ দেবালয় ছিল, অহোরহ মহুষ্যের (कालाश्लात निवृত्তि श्रेण ना, व्यश्तिश प्रवालश व ममूम य जम्मा श्रेगाष्ट्र। विथाण! कि भाष्य এই मकन অखिহ ं ठ रहेन ?

याश जागितथीत जटि जटशंतर विताज कतिज, এক न। এক আকারে তাহা বাঙ্গলার সর্বতি বিরাজমান ছिল। তথন हिन्दू धर्मात এक এक । উৎ मव आंत्र छ इरेड आत (वाध ररेड य जानत्मत जूकात्न रवड जगड ভাসিয়া গেল। দেকালের হুর্গোৎ-সব, দোল দেল রথ প্রভৃতি উৎদৰ যিনি একবার দেখিয়াছেন তিনিই ङात्नन (य, वङ्गदमग्वामी दमत कित्रभ जीवनी भिक्र ছिल, जानन डे९नव डेशटांश कतांत कि जमाधतं क्रमण ইহাদের ছিল। দেকালের বিবাহ অন প্রাশন প্রভৃতি ক্রিয়া कलाभ डेभिष्ठिं (इरेल लांक जानम् विख्व रहें। গ্রামে একটা বিবাহ উপস্থিত হইলে দে দেশের লোক ञान एक उन्न इरेज। এक वाजी एक वान था भारत अञ्चीन ध अभूमत अञ्चर्श्व इहेबाइ विधान कि भारिश जायामित व इर्गि इरेन ? कि भारि पन जनगूना इहेल ? कि शाल वंक्षवामी एत अकृ यु यूथ यालन इहेल, छे९माइशूर्ग श्रमग्र ७क इहेल, जानम छे९मव निर्माण इरेश क्रम्मन ध्वनि डेठिन ? य वन्न नगां ज वन्नश्रा इरेश গৃহলক্ষীরা অনবরত অল ব্যাঞ্জন বিতরণ করিতেন অথচ ভাণ্ডার ধন ধান্যে পরিপূর্ণ থাকিত, সেখানে কেন হা অत्तितं ভयक्षतं त्व छेठिल ? विधां जा यागता ज जानि ना य व्यागत्रा धमन कि পाপ कित्राि धिवः (मरे भारित जना পাই জগৎ শেঠের গৃহে লক্ষী অচলা হইয়া বিরাজ করি-(তন, শুনিতে পাই बांगी ज्वांनी ৫२ लक्ष টाकांत्र जांत ছিল, শুনিতে পাই নবদ্বীপাধিপতি বঙ্গ হিন্দু সমাজের वां जा हित्नन। इंशाप्तवह वा कि शार्थ ध्वः म इहेन ? कि পাপে গাভী তৃগ্ধশূন্য হইল, মহুষ্য জরাজীর্ণ, অলায়, জीवनग्ना श्रेन, श्रुक, श्रुक, वाशानग्ना श्रेन ? त्रक्शन वात शृत्सित नाम फल धात्वं कदत्र ना, वनवानीतां यात शहर

नगांश ऋ त्थ निक्ष सांय ना ? (मिश्रम्य ७ ध रुश्रा, (मिश्रम् শোকাকুল ব্যক্তিগণের ক্রন্দন ধ্বনি, দেশময় হাহাকার, व्यथि एएटम कोन पांत युक्त छिशश्चि नारे, तांकविक्षव कि याक्ताक उ विश्विदेशव नागि इर्जिक छेशिष्ठि इरेशि अ (मण ছिन्न जिन्न करत नारे, वतः এখन मिण मञ्जूना रहेगार , প্রতি গৃহবাদীর দারদেশে প্রায় রাজবিচারালয় স্থাপিত इहेबाएइ, द्रिल अदब, छिलिशाक दावा पिन श्रिश्र् हहे-शांट्स, डेक्स भिक्स। द्वांता (प्रभवांनी एपत यांनिनक डे९कर्ष इडे-यां एक, भारोतिक अ भागिमिक स्थर जार गत निगि छ मिन २ नृ जन উপক্রণ সৃষ্টি হইতেছে। এখন অসভ্য যাতাদলের পরি-वर्र्ड थिरबि दिवं रुष्टि इहेबाएइ, जाम পाणां न পरिवर्र्ड नृजन वारगाम वाख्लामित एष्टि इहेशाएइ, इलि शाक्तित शतिवर्र्ड वशी (চরিয়েট হইয়াছে, রামায়ণ মহাভারতের পরিবর্তে উত্তম উত্তম গ্রন্থের প্রচার হইরাছে, কিন্তু তথাচ বঙ্গ ভূমি क्रिंग भागांन इरेटिह, ्वाङ्गिनित्रा पथन मणाशांन कतियां अ अकू हा जिए ब न्या करत ना, जाशांप समय इरेट पुः थित खां क किवन थिवारिक रुष, धथन (कान জয় लांड कतिय़। তাহারা উৎসব আনন্দ করেনা, करिष्ठ मीर्घ निश्वाम পরিত্যাগ করে, পুত্র সন্তান হইলে लाकित छे९कर्श वृिक रुव, शूज कि कनाति विवार लहेशा काहात आनम इस ना, मिर्छात ममाशंम हहेरल मूथ श्रेष्ट्र হয় না,পতিত্ৰতা नতী স্বামীরগৃহে উপস্থিত হইয়া আর পবিএ व्यान त्म विश्वल इन ना, প্রত্যুত তাহার হৃদয়ে যেন আরো करिष्ठत वृक्ति रुग । विथाणा ! वन तार्जात थरे ताथ पूर्गणि इरेशाएइ, अर्जिनित कि योष्ठन इरेटन ना ? (युपि शिन्ध्य (मनीय मजाजात वरे जवार्थ कल रय, जार रहेल इर्बल वक्ष ममार्जित এই मভाত। महा कतात मिकि नारे, वक्ष मगाज छेक भिकान পরিবর্তে সংসারের শান্তিকে অধিক প্রার্থনীয় মনে করেন। যদি দারে দারে রাজ বিচারালয় স্থাপন হওয়ার অবার্থ ফল আত্ম কলহ হয়, তাহা इट्रेटल এই विচারালয় গুলি যত দূরে গমন করে তত্ই यङ्गालात विषय। यन यमि वङ्ग मभाष्मत अरे कर्छात छुर्मिशांत मिनर वृक्षि इश छाष्ट्रा इहेटन आभता वनि, अप्तर्भव यरथे है भांखि इहेशाए आव हेशा क पक्ष कविवाब প্রয়োজন নাই, বিধাতা বঙ্গদেশকে আর যন্ত্রণা না मिया देशांक त्रा जा जिल्ला निः क्षित्र कत्, आगता যাহা সহ্য করিলাম আমাদের পুত্র কন্যাদের যেন তাহা আর সহা করিতে না হয়। আমরা যাহা সহা করিলাম আমাদের পুত্র কন্যাদের তাহা সহ্য করিতে হইবে ইহা ठिछ। क्रिल आभारमत क्रमग्न विमीर्ग इग्न, विधा छ। इग्न, जामा-मिशंदक कामां कंत्र नम वक्ष प्रभावक अदक्षांत्र तमां छला (म31)

মড়ার উপর খাঁড়ার ঘা।

ফিবার হাঁদপাতাল ও ক্যাম্বেল মেডিকেল হাঁদ-পাতালে রোগীদিগের ঔষণ ও অন্যান্য বিষয়ে অতিরিক वाय रुय। ই एक मार्ट्य म्या वह मार्क्ट इहेया एए। তিনি এই নিমিত্ত এই তুই স্থানের হিদাব পত্র অনুসন্ধান क्रिटिं अक्षी क्रिमी नियुक क्रिय़ाइन। जिनि अ मश्रक्त य तिष्काणिष्ठेशन कित्रियाण्डन, छाशाट अरे तिथ অভিপ্রায় ব্যক্ত হইয়াছে যে, হাঁদপাতালের কর্পকীয়েরা দেখিবেন যেন এই বিভাগটিতে অপরিমিত ব্যয় না হয়। ব্যয় मकीर्ग कर्ता कि प्रकर्णिमिशंदक मण श्रामान कर्ता, अथवा अना कानिना अञ्चिनिक माधन करात निमिछ इएएन मार्ट्य এইরপ অনুসন্ধানে প্রবর্ত হইয়াছেন তাহা আমরা জানি না, किन्छ जिनि शामभाजाल मननीय वाय मश्कीर् कित्रवात জন্যে যেরপ দৃত্সংকল্লতা দেখাইরাছেন, তাহাতে যে रेश्लिभगान छारात नकल कार्या छन छिन ध भर्या छ ति। य (मरथन नारे, जिनि जारां जिन सरेगां एन। रेश्लिभगांन विनिद्यां एक, ध शर्यां होंग-পাতালে যে অপবায় হইয়াছে তাহাতে রোগিদিগের ठिकिৎमात्र कि आहातां मित्र शतिशां हित छे एक व हम नाहे, ইशांख इस छ य ममूनस निमञ्च कर्याजा तियन इ एख अहे ममू-मग्न ভात ছिल তাহাদেরই উপকার হইয়াছে, এবং গবর্ণ-रमन्छ यमि शाँमशाङादन शृक्वादशका कम अवध कि श्रिक्षिङ मान करवन जग्म इंडरन द्वाशिषिद्शव हिकि भाव

अ भरथात वागि इहेरव। এখন যে अभवात इ ये पिन अभिक्षिण अन्न त्वजनक्क क्छारम्ब हर्ष भागित्य द्वानी मिराव भथा ७ देवन विदेशन कात के एक मिन हेरा निवात हरेरव ना, स्वतार हेर्फन म भागत्न हेराहे हरेरव या, भूर्व्स अन्न क्ष्म देवन अमार्गत दीकि थाकारक कर्मा जिमितात हरा याहा द्वानी स्मृत जेभकातार्थ वाग्र हरे क अथन छाह ना।

ना । हेश्निग्गान हेएएन माह्यत्व यस्क्रिं कार्या इय তाश इहेटन मिटलंब जाबि विश्व । वस मिल এक जी स्वीर्ध हाँ मिशा जान विनित्न अ अजु जिन्ह म नाई হাসপাতালের অর্থ ঘদি অতৈনিক চিকিৎসালয় হয় इरेल जामादनत छेशमाछि ठिक इस ना। यिन इँ।म রোগীদিগের আত্মনাদপূর্ণ গৃহ হয় তাহা হইলে বন তাহাই হইয়া উঠিয়াছে। আবার যেরূপ দেশে রোগের প্রাত্তাব হইতেছে তেমনি লোকের অন্যা वृद्धि इटेटाडाइ, या वनमामां द्वारा भविशूर्व उ शैन इरेडिएइ, उठ िकि९मा थानी इल उ र्टेट एह । देश्ता कि मञ्जा एक किवल त्वार्शत श्रेष्ठ नारे, लाक्त अर्थ्त अमळ्ला र्य नारे, দেশীয় চিকিৎসার উপর লোকের বিশ্বাদের মুলো कि ब्रिशाष्ट्र । এত द्वित ममुन स वन ममाष्ट्र शृदर्भ (य। রোগ যেরূপ দিন দিন নূতন আকার ধারণ করি তেমনি পূর্বে যে জাতীয় চিকিৎসকের। ঔষধের চাদরে বান্ধিয়া পদত্রজে দারেং ভ্রমণ করিতেন, যাহ টাকা দর্শনি প্রাপ্ত হইলে কেবল নিরোগ ছত্ত প্রতি দিন রোগীকে প্রয়োজন মত দর্শন ও ঔষধ क्रिडिंग नां, मांधा ये द्यांगीत स्मया अ श्रायां করিতেন সে জাতীয়, চিকিৎসকের অপলোপ হুই এই জাতীয় কবিরাজের অপলেশপ্রের সঙ্গে মুভ यर न व अधिकाः भ यान इरेट हिक्टिमा छेठिया। অথচ আলোপেথিক চিকিৎসার কোন রূপ इ नारे। (मर्गत यथन এরপ অবস্থা তখन প্রজ त्रकात् जात गर्भाय अहत अहन कत्। कर्वग् । देश निभ न यमि उ व विषय यरशाश्युक गत्नार्या श्रामाः करत्रन नारे, जथां छेश्त था जि कथनरे रेट ७ বের ন্যায় তত কঠোর শাসনের প্রবর্তনা করেন श्रामिशाला अश्वाय श्रेल जाश निवायण करा। नट्श अवश शेष्णन मार्श्व यित (कदल अवे त्रां का का विषे का विष् अविष् इंदे कि विष আমরা তত ভীত হইতাম না, কিন্তু তিনি এ रयक्त श्वनक्र इरेशार्डन वाराउ हिक्रिया कर्ज्भकीरात्रा मछवजः (दाशीत स्विधा ७ स्वि উপেक्षा कतिया वाय कर्डन्स थाणि यज्ञ कतिर्वस, श्रामभागान कर्ड्क ध्यम या छे भकात इहेर डर वात श्रेष्य ना। २०।२० वरमत शृर्क श्रामभागात छनित्न लाटक छीछ इरेछ। छाराया रामभाषान यभागा विना छोन कति ७ এवः दिक् निर्णा छ ना इहेटल यात हाँ निशा छोटलत या छ। छ। छ। वात ই ডেন সাহে বের শাসনে আবার সম্ভবতঃ গ্র धरे शत्रम श्विकत कार्याष्ट्रित थि जि लगारकत तम् ७ ज्यात जेमग र्रेट्य। २० कि २० वरमन शुर् পাতালের প্রতি লোকের অশ্রনা থাকাতে ক্র वक्रामण ज्यां विशेष व्हेशास्त्र, वत्रप्तर्भ द्वां छिन्न जात दकान कथा नाहे, जथह मात दर्गन रहिया गाहै। ध्राभ मयस यमि हाम शुनित প্रতি লোকের ভক্তির লাঘ্ব হয়, ডা हिक्दिशांत भोक्दग्त थाछि छेटशका क्रिता साड वार्थशूर्ध कतात यक करतन, जारा रहेरन माधातरभत वि नक पूर्विष्टे इहेरव। हेर्छन मार्ट्य यास कर्वन्तर १ रम कमिणि नियुक्त कतिशाट्यन, छोश्व मध्या मी क्शिनात द्वारेम मार्ड वार्डन । जिलि कार्न

পাততঃ কি তুরবস্থা এবং এ সময় লোকের পাতাল প্রভৃতির প্রতি অশ্রনা হয় তাহা হইলেই विभी पिरशंत कि छ्तवश्रा इहेरव। वदनत वदनत ोि छात्र প্রাত্তাব হইয়া বঙ্গদেশের গত স্যানিট্রি जम मयदक्त धारे कार्य निथिज रहेशाटक (ध, "১৮१७ वरमदात्र मकल मारमङ वाङ्गलात्र मकल जिलाएं রোগ অধিক কি অল আকারে প্রাত্ত ত হয়। गांद्र। वाञ्चलादकं ७७७ मछनीर् विङ्क क्रिया ाथाय दिनान शीषा कर्ज् क कंड लांक आकां छ छ क्ति मूजा रम जारा निर्म कता रहेए एक वर वर ১৫৪ স্থানে ওলাউঠা সংক্রামক আকারে, ১৭৪ ठ ভয়াनक আকারে, ৩১৫ মণ্ডলীতে মধ্যম আকারে इय जवः किवन ५२ मखनीए हेश (मथा याय ना। मत व्यालका ध वदमत ४४०२४ इनं व्यक्तिक थर्ड রোগে মৃত্যু হয়।" "গত वर्नदाद मकल भक्ल एक्लाएक वमस्य द्वारंगत धाव् जीव र्य। ग्र धेरे রোগে ১०१८७ लीकের মৃত্যু হয়, ইহার ६मदत्र हेश षावा ६२४० लाटकत मृजू रहेगा हिल।" । ९मत्र मकल (जलांट वर्मद्व मकल मभय ख्रुद्व व व इया गंड वरमङ जात ७५०००० लाहकत मृजा शंत्र भूकी बदमत हेश कर्ज़ क ७७৮०৮१ ल्लारकत रेगाहिल।" "अजीर्ग রোগে গত বৎদরের পূর্ব यशिका विखन लाकित थाय मृज्य इहेशाहिल।" वदमदबब मानिछेत्रि त्रिरभाष्ठे अम्। भि श्रकाभिज , किन्न ध वरमन य वामनात धक छान्न रहेटन गांख भर्गाख महामानि डेभिष्ठि इहेगा ছिल তाहा वाध लिशे कात्नन। धक्त व्यवशाय स्व कार्या ग्वर्यम-তিছিত চিকিৎদালয় গুলির প্রতি লোকের হতশ্রমা रषक्ष जारव इँ। मशा जारलब वाय कर्डन क्रिड कित्रगांद्यन जाशांद्य धरे क्रिश विश्रम रहेवांत

नि इनक्य छे। कात विक्षित अपनी स्वता में अपन वागालित विश्वाम रुग्न (य, यं किन किनिकां का-गंत रुख स्मित खंडां खंडां वात वार्षिठ थाकित म्हा मनन नाई। यथन थानामत व्यक्तिक मिकाठावामी निठावा (वाड भिम श्रमाटन मन्मड नि आगारमत धरे विशाम आरता मृही छू इ श। अशोर्क तमम मस्दक्ष आंगोरिन द निष्ठा दा ्राञाब मद्भ कां क करत्रन जांशां क वां भारत म बादा। मृड़ीच्छ रुष्न, धवः ध मम्रदम य किह ल ठांश लाहेरमम छारिकात मगग पूत्र हहेल। अथन गांत्र कान त्रांबदनिष्ठिक वात्माणन छेशश्चि रहेल । ब ভয় रम या वावाव रेरावा मिल्यं कि क्रि जि ठिलिटलन, এই জন্যে আমাদের ইচ্ছা যে, ইহারা, আর वाकरेनिकिक शानियांग ना करवन। এই निमिख अ है। का नरेबा किनका का वाजी ता नाधात न जा न अनिया आगारमुत जय इरेयार्ड, जानरमुत य नारे। जनकः आयता कानिना ना य श्रञ्जाविक डिक्मणा मित्रिक अजात सार्थत्रका, कि गवर्गयन्तेत्र शक वर्षया अञ्चलां निका विकि वार्थ नाधन। विकिथ । আশোণিয়েসন যে আকারে এসম্বন্ধে আবেদন ण मजांत कार्यामि (मरे क्ष र्य তবে এ मजा ना हि जाम रुग्र। कात्रश वश्रवामी एमत्र এठ जीवनी भक्ति ा की छ। क तिया छे हा वृथा नहे करता गवर्गरम है व्र कित्रियां देश को जिल्ल विश्व जिल्ल जिल्ला क्रिक्टिह्न, यङ निन विधाङ। डाश्टाम्ब वाकायः है द्वन छारांतां नित्व रहेशा छारां धानान कतिद्व। निष्ड्य सार्थ्व नियिख তাशां पिशदक विवा पान डी महिं छिन स्म मा, छाश्ता धक्रिश वक् घरशका छी विस्क्रोतियात श्रिकिनिधिमिरगत छे भन्न निर्छत कतिएछ मारम करत। रेडिंग मोर्ट्य धर्थान जित्रकान मा। नार्ध निवेत अध्यात क्याना शाना मीन हीन

দরিদ্রদিগের প্রতি যেরপে অবিচার করিলেন, তাহা তিনি হয় ত শীঘ্র বুঝিতে পারিবেন। সার জর্জ ক্যাম্বেলের যত্ন একার রুপা হউক, ইহা ফলবতী হইবার অবশ্য স্থযোগ উপস্থিত হইবে। বিধাতার স্পৃষ্টি কখনই লয় হইবে না। তিনি রাজপ্রুষদিগের হৃদয়ে করুণার উদয় করিবেন। দরিদ্রের চীৎকার ক্রন্দন, আত্মনাদ এক না এক সময়ে অবশ্য সাগর পার হইয়া গমন করিবে, অবশ্য ইহা এক সময় সিমলার অত্যুচ্চ পর্বাত, শিখরে গমন করিবে, এই ক্রন্দনের রোলে অবশ্য এক না এক সময় ইংলণ্ডেশ্বরীর সিংহাসন টলিবে।

विशिश्वानीतां अ गान्य, किनका जावानीतां अ गान्य। विशिष्टेवामी देश्ताक्षिणित गृष्ट देश्व ७, वशानकात देश-वाकिमिश्व गृरु उर्गिए । वाक्षारे शिकिं, वाक्षारे টাইমদের সম্পাদকও ইংরাজ, কলিকাতার ইংরাজি সম্বাদ পত্তের সম্পাদকগণও ইংরাজ, কিন্তু ইহাদের মধ্যে কত প্রভেদ। বোষাইবাসীরা স্বার্থে মোহিত হইলেন না, তাহারা ইহা এক বারও মনে চিন্তা করিলেন না যে, मित्रिज প্রজাদিগকে রক্ষা করিতে হইলে পাছে তাহাদের कत जात वृक्ति रय। এই স্থাধােগ গ্বর্ণমেন্টের পক্ষ সম-र्थन कतिया निष्ण यार्थ जाधन कत्रात প্রবৃত্তি তাহাদের मत्न मृह्दर्डत निमिख डेम्य इरेन ना, वाश्वारेवाशी रेश्त्रां (अक्वांत्र किछ। क्रिलिन ना (य, लारेलिन छो। छात्र প্রতিবাদ করিলে তাহাদের স্বজাতির অর্থে হস্ত-क्षित्र क्रिंड इडेरव। त्वाश्वारे श्वाड (वाश्वारे छै। हेम हमात्र विवाम, किन्न ठाहाता मतिष श्रामात करना धरे विवाम विश्व इरेलन। बारेटमम छान्रा ना मिल इनकम हो। ज किएक इहेरव, द्वोि मार्ट्रवं ध जांफ्नां म তাহারা পতিত হইলেন না। তাহারা বীর পুরুয়ের नाां यनकर्छ मूमूर्य काणिश लाकरक कत जात इहेरज बियुक कतांत जत्ना युक्त क्लाब थारवन कतियारह्न। धवः यिन उ ठाशात्रा यूष्क ज्ञी ना इडेन, তाशात्रा हेश मथमान क्रिलान (य, श्वार्थ्त निगिष्ठ ভারতবর্ষে ময়্যা জাতি একেবারে জঘন্যাবস্থায় পতিত হয় নাই। দেশের মঙ্গ-लেत निगिछ सार्थ डेन श्चन करत व्यापन वक्त लाक अ আছেন।

यक्षवानीता यङ मिन मिल्यात यक्ष निमान किंगिकां जां नी मिर्गत थि जि निर्जत कित्रियन जज मिन मिट्भात धरे जाभ घूर्गिक रहेर्त, जन मिन धरे जाभ অবিচার হইবে। স্বার্থ ও অজ্ঞতায় কলিকাতা-बामीपिशदक এक नृजन जीब कतिया जूलियाएए। जोशता इं तां ज नमां क क् के उद्धिकिं इन, इं तां कि नमां भव वांता छान लां क करनन, तांकशृक्यमिश्त तिर्शार्धे भार्ठ क्रिया मिट्यंत अवशा अवशं इन, आवात तांक अमारमत চাক চিকা দেখিয়া ২৪ ঘন্টা বিশ্বয়াপন অবস্থায় থাকেন। এই লোভ ও বিমোহিততা উলংঘন করা নিতান্ত সহজ ব্যাপার नर्ट, विस्थि इर्वन পদানত वाञानित शक्क देश এक क्रिश व्यनख्य। ञ्चल्रां व्यन्तक मगग किल्कां जानीता व्यत्निष्ठांत्र अ व्यत्नक कृष्टि करत्न। वार्वात अत्नक ममग्र চতুর ইংরাজদিগের চাতুরিতে বঞ্চিত হন। কিন্তু তাহারা ভ্ৰমে যাহা করেন তাহার ফলটি যদি সামান্য হইত তাহা रहेल आमता इःथिड रहेणाम ना। यथन इति हे खियान व्यादिशानित्यमन देनकम छै। वा छित्रश या छत्राट वानन श्रिकां करतन धवः नां भात्र में मार्थ में बाह्य कित्रा करमहे मोर्ट्वरक অভिनमन পত প্রদান করেন তখন ইহারা म्प्ति मर्कनां करतन। তाराता এ ভ্ৰমে পতিত ना ठी९कांत्र कतिराज्यक्र जारा जित्रां यार्ज, शवर्गमान्त्रेत वादयंत इाटमत शदक २८ घणी यञ्च थाकिछ, এछ निन इंश्तांक ७ अपनिगारक वांबीयका इहेक, शवर्यमान উপর এত দিন প্রজার প্রভুত্তের রুদ্ধি হইত, এবং তাহা হইলে হয়ত বোষাই ও মাক্রাজ ছভিক্ষের জন্যে উচ্ছिল याईक ना, आभादमत धात्रश छ्त्रवङ्ग इहेक ना। वश्वामीता शूर्व एय ज्य करत्व ध्वात्र छाश् मः लाधन कतिएक शांतिएकन, किन्छ सार्थ भिन्ति एनए सब मर्दनाय कतिन।

গবর্ণমেন্ট ফরেষ্ট ডিপার্টমেন্টে ছই শত টাকা বেত-नित्र कङक छानि मव आमिष्टिन्छे कनमात्र विषेत्र नियुक क्रिवात नःकन्न क्रियाद्या याश्वा थ्रे क्र्यात था-काञ्ची তাহার। স্বয়ং ফরেষ্ট বিভাগের কনসারবেটর, ডিপুটী कनमात्रविद्यात, व्यथवा कदब्रि मत्रवियादब्र निक्षे छेथ-व्याद्यमन क्रिद्रियन। वित्नुष कात्र छिन्न २० वदमद्वित्र व्यिक कि ३५ वरमदात व्यमिक वग्न काराक व कर्य नियुक कता इरेटव ना । कर्षाकाश्चीभन वाभनामत मभक्क मिविल ७ क्दबंहे विভाগের অন্যান্য কর্মচারী-मिर्गित मर्क मयान शम यर्गामा ताथिए शारतन, তाश्मित এরূপ লেখা পড়া জ্ঞাত হওয়া আবশ্যক। ইচ্ছা করিলে ফরেপ্ত विভाগের ইনেম্পেক্টর জেনারেলের নিকট আবেদন করা यारेट शादा। आदिमनकातीता मत्रशास्य निक नाग, कोथोय শिक्षिত হই योছেन, তাহার বিশেষ বিবরণ, কোথায় कि कर्स करा श्रेमाए जाशा नार्किं कि कहे, श्रिक्शनी अथना बक्ष पिशीय कि कांगाति ভाষाय পातिपर्शिवात मार्टिकिटक है, मार्त्व कि विष्ठ कात्नन তा श्रांत मार्हि कि कि विशास्त्र नित्र भारत माथिन कतिए इरेटन। याश्तां कृष्कि काल्या आतिरहेने এজিনিয়ারির পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছেন অথবা সবে বি-ভাগে कां कि कि विया एक वां शामित मर्व मार्टिं कि कि वे इशेरव ना, তবে সাবে विভাগ হইতে व्याद्यम्न क्रिद्रवन याश्ता <u>जाशादम</u> त পারদর্শিতা সম্বন্ধে সার্টিফিকেট দিতে হইবে। যে नमून वर्षाकाः थीता मत्नानी इरेदन डारापत नाम व्याक्तिश दिश्व हो वया इरेप वर्ष कर्यथानि इरेपन ইহারা কর্ম পাইবেন। তবে নাম রেজিপ্তরি হইলেই य जिनि कर्ष भारेरवन जारां न कान कथा नारे। कान कांन शान काफिक काल्यक छेडीर्ग ছाजেता हिन्स ভाषाय পারদর্শিতার সার্টিফিকেট না দিতে পারিলেও এই কর্মে नियुक्त श्रेदिन, তবে ইशामित शिक्त ভाষার পরীক্ষা দিতে श्रेट्य, धवः यक मिन धरे भदीका ना मिद्यन कक मिन का-श्वा २०० छोकाम अरे পদে नियुक रुरेदवन। इम्र गाम आत अक्री भन्नीका मिएक इहेरव। भन्नीकाम डेडीर्ग इहेरल कर्ष्य नियम मठ नियुक रहेरवन। छेপরिউक সম্বাদ্তী পাঠ कतिया कर्याकाधी वाक्रानि यूवकिपत्रत आंगा প্रজ्य निउ रहेरव कि ख्यां या दिन जय राम शाहि कि वन यन छा श श्री शिय निगिन्न जाशान जागान डेमीशन इस। मछवजः डेशनिडेक পদ গুলি আমাদিগকে দেন গ্ৰণ্মেন্টের সেরূপ ইচ্ছা নহে, তাহা হইলে কর্ম নির্কাচন সম্বন্ধে কোন পরীক্ষার সৃষ্টি रहेठ, তাহা रहेल कर्ष्य नियुक्त कता ना कतात जात गवर्न-याने कर्ज् क मण्णूर्ग अरे विजाणात कर्ज् भकीयामत राख वर्षन इटेंच ना। यादा इडेक, कर्षाकाःथी व्यथि त्याना युवकिमिशदक आभवा देनवाभा ११थ अवनम्बन क्रिडिं विन क्रवा উচিত। এ कांक छानि नरेशा विवाम क्रवाटि उ जातक कल जांद्र।

--000--

প্রান্তে ভবিষ্যতে কি প্রণালিতে শান্তি রক্ষা করা উচিত ইহা মীমাংসা করিবার জন্যে একটা কমিশন নিযুক্ত ररेटिट । कमिनन दाता এर करमकी विषय मावास इरेदा। कि প्रांगीरिक विश्यक रहेरक श्री करा याहेटव। প্राञ्ज ध्य ममूनम शाम जाटक दम ममूनम शामः बानी मिर्গের হস্তে অস্ত্র অর্পণ করিয়া এক দল দৈন उ প্রস্তুত করা উচিত কি না এবং ইহা সম্ভব কি না, পোলি-म्बर्ग विशास्त्र कर्डवा कर्य कि थाकित्व, আভ্যান্তরিক ও প্রান্তের কাজ কর্ম করিবার জন্যে কোথায় কত পোলিশ कर्माठाती नियुक्त कता छेठिछ, পোলिশ देमना धवः धाम-वानी मिशदक कछ दिवजन, कि कि वास धवः किक्रभ व्यर्थ माश्या कितिए इन्ट्रिंव, श्रीएउ य ममूनम श्रीन জাতি আছে পাশ সম্বন্ধে তাহাদের কি জবদিহি করিতে श्रेष । बिनिश वांष्णात्र यथा य ममूनग साधीन वांजावा আছেন তাহাদের দারা কি কি কাজ করিয়া লওয়া षारेत, धोर्ड धर्ग ७ थाना धांखा का बिर्ज रहेत्व कि ना

এবং এ স্থানে যত লোক আছে তাহাদিগকে নিরস্ত্র । বোধ হয় এই নিমিত্ত এখনও জোয়াকিদিগের যুদ্ধের শেষ क्वा कर्डवा कि ना।

-000-

मात्र तिष्ठार्ड रिष्णुन गम्यत्न आशिरलि रेवक मयरक প্রস্তাব করেন ইতিয়া গ্বর্ণনেও তাহা মুঞ্জর করিয়া छेशे (क्टें) आक्रिक निकं मुक्ष त्वत काला (थ्वतन कतियादिन। आगता अरे विठात अनानित शक वतावित मगर्थन कतियाछि। ইডেन माह्य এখানে উপস্থিত रहेश। इरात विशक्ष मधायमान रहेवात यथन উদ্যোগ करतन उथन देखियान लीग हेरा लहेता जाति जात्नालन कदत्न। यमि (ष्ठेषे मिद्धारेकि हेशां मर्माठ श्रमान करत्रन তाহा হইলে ইহা দারা যে विচার প্রণালীর विशिष উৎकर्ष इইবে তাহা আমরা অনায়াদে অञ्चव कतिराज भाति। তবে ভয়ের মধ্যে এখন ইডেন সাহেব वात्रनात भवतर्व । जिनि स्वत्रभ भाजाभाज विस्वहना ना कित्रा अञ्चर्गा लाकिएक প্রতিপালন করিতেছেন তাহাতে আমাদের ভয় হয় পাছে তিনি অনুপযুক্ত লোক-मिगदक आशिदल छ टिक्षंत्र विठात्रशि श्रिम नियुक्त करतन।

ভারতবর্ষের প্রান্তে যত গুলি বড় বড় লোক ছিলেন তাহারা একে একে মৃত্যু গ্রাদে পতিত হইলেন। সোয়া-তের আখনের মৃত্যুর পর তাহার প্রতিযোগী আর এক জन आथरमत मृशा रय। প্রান্তে রাষ্ট্র যে, কাবুলের वागित्तत्व श्रक्त मृज्य देहेशाएक, वावात कनत्व एय किर्शाटकत आथरमत् अ मृजू इहेशाट । এই आथम क्रक जन क्रिक श्रिथान लाक। इनि उश्विमिर्ग्न छक ছिলেন। মুদলমান ধর্ম এখনও সজীব আছে বটে, কিন্ত श्रावि धर्मात नाम প्रथत धर्म आत कगर नाहै। প্রবল প্রতাপান্বিত ইংলিশ গ্বর্ণমেণ্ট এক দিন ভীত श्रेग़िছिल्न (य, পाছে ওश्वि मूमलमानिएग्र भारा তাহারা রাজ্য এপ্ত হন, স্মৃতরাং এই ধর্মের গুরু যিনি তিনি माभागा त्लाक नन। अश्विमित्शत धर्मात छे भत त्यक्रभ অচলা ভক্তি তাহাতে কোহাতের আথলের মৃত্যুর কথা শুনিয়া তাহারা যে অতিশয় শোকাকুল হইবেন তাহার कान जून नारे।

कामगांद्र शंजन मयदक निम्निथि ज मयां म आमियां ছে। " १ हे फिरमम्बद्ध कामगांत भाक इस्छ পতिত इहेसां ए । कामगात्त्रत्र आभित्त्र कि गिंठ इहेगाएह, जाहात काम मश्राम এथन । পাওয়া যায় নাই, তবে তাহার চারি জন ्यशिला ७ ठाति ज्न वामि क्रिय ताष्ठा शलायन कतिया ছে। आगता গত बात विलियां हि त्य, शृथिवीटि यिनि ये अधर्म ी-काष करत्रन, पथन ठाशत ठठ ष्र । पूर्कित परे षरना भठन रुरेल, क्रियात এই निभिज जय रुरेल, कामगात এर निभिज भक् इस्ड পতिত इहेल, এवर हिन গ্वर्गस्टित विषयी देनना এই निमिख कामगादित প্রবেশ করিল। ফল হিন্দু জাতির ও হিন্দু ধর্মের ন্যায় মুসলমান জাতি ও মুসলমান - थर्प्यत वाध र्म পত्न त्रेल। वोक यर्प्यत ७ वोक जाजित এখন পতন হইলে আশিয়ার পতন সম্পূর্ণ হয়। কাস-গারের পতন সম্বন্ধে আমাদের স্থথের মধ্যে এই যে, কাস-_ शांत इंडेर्ताशीय कांनि जांनित इस्ड शिंठ इय नारे।

এই क्रश बाह्र (य, जावजवर्शव श्राटिख इरेजि साधीन (य, डाँश्व जत्नारे जायांकिमिश्व পতन रहेन। आमि-(तत পরামর্শ ও উৎসাহে তাহারা বৃটিশ রাজ্যের সঙ্গে विवाम आंत्र करत, अथा विशम कारण जिन जाशामिशदक कान माश्या कितिलन ना। आदिमनकातीता वित्रक इरेगा िविनियादिक्न (य, जिनि ध्यांत (यक्तर्थ काक कित्रियादिक्न তাহাতে তাঁহার আলি মদ্জিদ হুর্গ রক্ষার জন্য তিনি शास्त्रामीनिरगत कोन का माराया शास रहेरवन ना। এই সম্বাদ্টী সত্য कि न। তাহা আমরা জানি না, यि मত্য र्य তाश रहेल र्य ज आभित्रत थरे विश्वामवाजक जात वात्रा है श्वाकिपित्रत्र किष्ठ डे अकात्र रहेटव, किन्छ आभित्र यिन कीविङ थारकन डाइ। इहेरल किছ विभन इहेवांत्र मख्य।

इय नारे।

-000-

दिकुल গ্বর্ণমেন্টের আদেশ অনুসারে হাইকোর্টে नियम क्रिया एक्न (य, जिनांत जिला (य ममून्य लांक দেওয়ানি আদালতে আবদ্ধ থাকে তাহাদের মাদিক थाताकि यमि भूकि मारमत लिय मिन माथिन ना इय जाश इरेल कर्ज्र शकी एयत। তা হা দিগকে অविল स्थ का ता शात श्रेष्ठ मूकि मिदवन।

গ্বর্ণমেন্ট সম্বাদ পাইয়াছেন যে জোয়াকিগণ গ্বর্ণ-মেন্টের প্রস্তাবিত সর্ভে সন্ধি স্থাপন করিতে সমত হই-য়াছে। তাহাদের দলপতিরা সত্তর পেশোয়ারে উপস্থিত रहेशा मिकि याकत कतिरव।

विकाशन॥

যোগবাশিষ্ঠ রামায়ণ বিতরণ (পূর্বথও)

वाभि (कवन जाकमाञ्चन ও घूरे जन मतकादित विजन किश्रि जर्गाद मर्स मस्य २०० माज लहेश वार्ग वानिष्ठित देवतागा इरेट छेशनम श्यां श्रां थां थकत्व विতরণ করিব। প্রাথিগণ ২২এ ফাল গুণের মধ্যে অগ্রিম २० मिश्र किकानाय आदिषन कतिदवन।

কলিকাতা বাগৰাজার

निगरनम्ह ज छो ठा घा

तां जतां ज तहां छ है है ३७ नः । यां गवां निष्ठे व्यकां नवः।

युष्ठा मश्रकी य जादित मश्योग।

১৯শে ফেব্রুয়ারি। ইংলিশ রণতরা মুডানিয়া হইতে টুজলাতে গমন করিয়াছে। প্রিন্স বিদমার্ক জার্মেনীর পালিয়ামেণ্টে বজ্তা करतन य প্রস্তাবিত সন্ধির মধ্যে এরপ কিছু নাই যাহাতে জার্মেনীর বর্ত্তমান ভারের পরিবর্ত্তন করার প্রয়োজন হইতে পারে। তাহার विश्राम हेश लहेया हेछ রোপে আবার युक्त हहेरव ना। जार्स्यनी मधावर्डी थाकिट्ड शाद्रिन किन्ত किन्नूट्डि इन्डट्किश कित्रिवन ना এवः जार्यनी, इंश्वंख, অधीया এক ত্রিত হইয়া কশিয়ার বিপক্ষে দণ্ডায়মান হন এরূপ कार्या जिनि উৎসাহ প্রদান করিবেন না। রাজ্যসভা স্থাপন স্থির হইয়াছে। অষ্ট্রীয়ার রাজমন্ত্রী সভার প্রেসিডেণ্ট প্রকাশ করেন ধে याशांट य कार्या इंडे तार्शित वाालम व्यव शांउतात ववः विद्वारा গবর্ণমেণ্টের স্বার্থ ধ্বংশ হয় তাহা তাঁহারা করিতে দিবেন না। গালি-পোলিতে রুগিয়র। গমন করে কি না দে সম্বন্ধে ইংলও ও রুশিয়াতে कथा वार्छ। इंहर्डिছ। आंशांभी कला ग्वर्ग्य व ममुकीय ममून्य कथा अकां म कतिरवन।

२) भा नर्यकां मार्क्व थकां कित्रशास्त्र स्व, क्षिय्रता शानि-পোলি বুলেয়ার লাইন্স, অথথা ডার্ডিনেলিসের আশিয়ার দিকে গমন क्तिरवन ना । এक मश्रारङ्क मस्या त्वछन त्वछन त्रां क्रमङा आञ्छ

তুক আৰ্জ্জক্ম २२८म। कृणियुद्धा तष्ठेठढक शयन कतियादह। পরিত্যাগ করিয়াছে।

২৩শে। রুশিয়রা স্থলতানের নিকট তাহার কতকগুলি রণতরী চাহিয়াছেন কিন্তু স্থলতান স্বীকার হন নাই। তিনি বলিয়াছেন যে वतः जिनि ইश नष्टे कतिर्वन। मिक পজের স্বাক্ষর করা বিলম্ব হই-তেছে। ৰোধ হয় কশিয়রা কনেষ্টেণ্টিনোপোলে গমন করিবে।

२8८म। यपि ऋलाजान ইংরাজদিগকে রণতরী অর্পণ না করেন তাহা হইলে क्रिया রণতরী দাবি করিবে না। আগামী কলা গ্রাণ্ড ডिউक এवः मिकर्ये शामा मिक्रिकारो मिक्रि পতে शाक्रव कविरवन। कृशिय (इंड क्यायाँगादा मिडियांत विक छंडदत ष्टिकादनम नामक श्रादन लख्या इड्याट्ट। क्रियाता शिर्तां । अ वाकशानानारक नामक शन व्यक्षिकांत्र कित्रियाण्ड, मात्रियानता ইश्द्र প্रতিवान कित्रियाण्ड विवः তাহারা নিদ্কিতে প্রত্যাবর্ত্তন করিতেছে।

मिका मकाख निम्निणिश्व न्वन मर्बिश्नि थकाशिक इरेगाएए। वनश्विया क्षप्रताका छ। निषेव इहेट वान्कन श्यां छ धवः कृष्मां श्व इट्रेंड मार्कियात थाछ शर्याछ विछ् छ इट्रेंव। এত डिन गातिथजा (आिं प्रात्नी शल वादम) এवः (थम ७ मिंदिणीन मात्र अधिकाः में छेशत অस्टःर्गठ रहेरव । वलरगित्रिय। तार्षात्र उषावधारनत जात प्रहे वरमत পर्याख कडक छनि क्रियानित इस्ड थाकित्व धवः धे ममस পर्याख व॰ हाजात क्रिया देमना উহা অধিকার করিয়া থাকিবে। সারভিয়ার ও সণ্টেলিগ্রোর আয়তন বৃদ্ধি হইবে। রাসিয়া বেসারেভিয়ার পরিবর্তে क्रियानियादक छूत्रुष्ठमा थानान क्रियान। क्लान क्राञ्ति त्र त्राञ्ती छात्रष्ठ निविम मिया याइँ তে পারিবে না কিন্ত সকল জাতীয় বণিকদিগের জাহাজ युष्कत मन्यू अभनाशमन कतिए शादिर । क्रिया युष्कत क्रिज्य व निषिष्ठ २०० को हो हो को हो हिया हिन । अहे कि ज श्वनार्थ कु कि जानि-

शाक इस थानि त्रावती, कार्म, व्यवेश, व्याजिन, वात्रमाहन, व्यापन এবং বার কোটী টাকার খত প্রদান করিয়াছেন, এতন্তিয় বলগেরিয়া ও इंजिপটের রাজস্ব কশিয়া আদায় করিবেল।

२৫। देश्तिकी मचाम পত्यित घट मित्र वर्ष छनि অভিশয় कटोत इट्याएछ। এवः তाहादम् मण्ड ट्रेडेद्राप्त युक्त ह्हेवात मखावना। अधिया माभविक आसाजानत वृक्ति कतिएउ ছেन।

२७। थिया शक्त कांक भीष्ठि इहेग्नाह्म । भागि ब्राप्य कर्न-विङक इय धि क्रिया यि इिजिপটে त्रांक्य आगाय करतन, छारा इरेला ইংলভের সমূহ ক্ষতি হইবার সভাবনা। ক্রশিয়া ও তুকির সলি স্থাক্ত-तिङ इय नाई। जूकि ছय थानि तथ्छती क्रियारक श्रमान कतिरवन कि ना তাহা সাবा इ হয় नारे।

भश्याम ।

— টেলিফোনের দারা দূর হইতে আলাপ করা যায়, কিন্ত এখন আর একটি বৈজ্ঞানিক যন্ত্রের সৃষ্টি হইয়াছে। এই যন্ত্র দারা কেবল দূর इरेट लांक व बाकाानाश कतिए मक्य इरेट मं, डाड़िड चालांक प महांस छिलिक्शन याश पृत इहेटि शन शन शन शन शन सार्क मिथान याहेरव अर्था९ योजनान्तर इटेट अथन अटे यन योग योग लाक कवन कथावानी किहा अक्रम इंहेर्वन ना, এक श्लान विमिया প्रक्लार्व मूच पिथिया यिक्र कथावार्छ। हल इंश घात्र। छा शहे इहेरव।

—श्दर्व बाह्र इय रग, एडबागां जिथां रठ आखवामीबा छेशजव कबाय धेरे शामित शथ किमानात व्यवस्ति कितिएहिन मि व्यम्लक । धेरे शामित क्তक छिल প्राञ्चनामी व्यमग्रापिरगत निक्रे होता याम व्याह्य वहे मत्मह इख्यादि किम्भनात माद्दिव छाश्मिशदक व्यवद्राध कदत्रन ।

= काम्मीरत्व भार्वजीय जकाल अथन लाक्त जाति अञ्चक्छे इरेग्नारक्।

—कावूल এবার যেরপ তুষার পতিত হইয়াছে এরপ তুষার আর कान काल मिथान পতिত इय नाई। जुरादि वाद्यामम् वस इय ववः लाक्त्र गंजायां कत्रा प्रःमाधा इरेया छेठि।

—সোয়াতের মৃত জাথন্দের পুত্র মিয়াপুল তাহার পিতার ন্যায় আপনিও ধর্ম চিন্তায় ব্যাপত হইতে সংকল করিয়াছেন। এ দিকে তাহার শক্ত ডবের সর্দার সদৈনো সোয়াতে উপস্থিত হইয়াছে। ইহার সঙ্গে मायार्जन जाथत्मत युक्त इहेवान मञ्जावना। यूक्त कि इस वन् याय ना।

— এই क्रां ताडे या, शिम कनछित्र मद्य शिम एए छात्रिक ठाम दम्ब कना। त विवार रहेरव। ইউরোপের मध्या यारात्र। अथान তাराता मकलर ইংরাজদিগের ঘদিষ্ঠ কুটুম্ব, অথচ যাহার। ইহাদের কুটুম্ব তাহাদের সম্বে ইহাদের বিবাদ। ইংরাজ জাতি কতক দিলির লাড্ডুর নাায়।

—বোধ হয় পূর্বে জন্মের কোন পাপের নিমিত্ত জাপানের আশিয়ায় জন্ম হইয়াছিল, কারণ জাপানবাদীরা অনেক বিষয়ে আশিয় জাতির नाग्य ज्यना नरह। ইहाता थाय मकल विवस्य ইউরোপীय জাতিব मद्भ म्यान উन्नि क्रिडिছ। জाপान গ্বর্ণেট যুদ্দ বিদ্যা শিকা कत्रिवात जात्ना এक जन देमनिक शूक्षंदक कृत्म ध्यत्न कर्त्रन এवः তুর্কি ও রাণিয়ার যুদ্ধ আরম্ভ হইলে তিনি সমর কেতে যুদ্ধ শিকার নিমিত্ত প্রেরিত হন। তিনি এ পর্যান্ত বরাবর যুদ্ধ স্থলে অবস্থিতি করিয়া যুদ্ধ শিক্ষা করিয়াছেন। সম্প্রতি জাপান গ্রব্যেণ্ট এক থানি রণতরী গোগে তাহাকে ভূমধা মহাসাগরে পেরণ করেন এবং কশ সমাট ইহাকে আদরের সহিত গ্রহণ করেন।

— हिन्द् हिटेडिं विशिवाहिन, मात्र तिहार्ड हिन्न मार्व वनमार्यम দমনের "বিধান করিয়া এদেশীয় নিরীহ লোকদিগের শান্তির স্থপথ कित्रशाहित्नन, किन्न अमनी ইएएत मरशानत वन्नरमर्भन त्मालितन গ্বৰ্ণ ইইয়া সে পথে কণ্টক স্থাপন ক্রিয়াছেল অল্ল ক্রেক মাস ইইল ইডেন সাহেব বদমায়েসদিগের প্রতি যথেপ্ট অমুগ্র প্রকাশ করাতে উহারা এক কালে দিগুণ সাহসে স্বার্থ সাধনার্থ হন্ত প্রসারণ করিতেছে। शान्श চুরি ডাকাইতি এবং লোকের উপর অনর্থ অত্যাচার ইইতেছে, - य मकल अमक्र तिं किं किंगू अमात्र कांगा कि तिया अमिरक हैं তাহা निगरक পুলিষ পর্যান্ত অবগত আছেন, কিন্তু ইডেন সাহেবের কঠোর তিরক্ষার ভায়ে কেহই সাহস পূর্বক টুউহাদের স্মৃতিত শাসনে मनर्थ इट्रेंडिंहिन न।। भूति छाकाडि छिन छात्मत थिलाय व्यन्दक्ष স্ক্ৰাশ হইয়াছে। তৎপর আইন প্রভাবে নগর হইতে তাড়িত হইয়া উহারা গ্রাম সমূহে আশ্রয় লইয়াছে। নগর অপেকা প্রামে উহাদের যে অধিকতর লাভ হইতেছে, ভাহা সহজেই প্রমাণি হইতে পারে। नगरत नाना जानका जाएक, शास्म दिनान नकात विवय नारे। इति অথবা বল প্রয়োগ উভয়ই চলিতেছে, তভ্তিন জুয়। খেলার উপার্জনত णाए ए। कतिया विमियाए । ইहा बाता अनुवनभी वह मध्याक लाकरक প্রতারিত এবং স্বধনে বঞ্চিত করিতেছে; ইহা সামান্য অনিষ্টকর নহে णामता ज्याम वात अमकल कथा अकाम कतियाहि, किंख भवर्षस्टिय रेष्ण। यथन थाना क्रथ, उथन এ সকল श्रामिष्टित्र कथात्र कर्गभाष कर्गभाष कत्रिक थायकां भाग ना। य रहेक, यागता कर्णकरक समृत्यां कतिएकहि स वगगादममिगदक भागन भूर्लिक क्षकांच दिख्याधन

कक्त।

—চিনবাদীরা দেশ হইতে রেলওয়ে টেলিগ্রাফ উঠাইয়া দিয়া টেলি ফোনের ব্যবহার করিতেছে।

— চিন দেশে আজ কয়েক বৎদর অবধি ভয়ানক ছর্ভিক্ষ হইতেছে।

সম্প্রতি সেথানে একটি লোমহর্ষ ব্যাপার হইয়া গিয়াছে। টাইলেষ্টন

লামক স্থানে চারি হাজার ছর্ভিক্ষ প্রপীড়িত ব্যক্তি একত্রিত হইয়া

অবস্থিতি করিত। এই স্থানে দৈবাৎ আগুণ লাগে এবং আগুণ নিবারণ

করিবার পূর্ব্বে ১০০৪ এক হাজার চারি শত লোক অগ্নি কর্ত্বক দক্ষ

হইয়া প্রাণ ত্যাগ করে।

—টিকারির মহারাজা টিকারি চিকিৎসালয়ের জন্য ১২ হাজাব, ফতেপুর ও টিকারির মধ্যে পাকা রাস্তা নির্মাণের নিমিত্ত ১৬ হাজার,এবং শিল্প বিদ্যালয়ের জন্যে এক হাজার টাকা দান করিয়াছেন।

— এই রূপ গল্প উঠিয়াছে যে, আমিরের ইতিমধ্যে ছয় লক্ষ টাকার প্রয়োজন হয়। তিনি এই টাকা সংগ্রহ করিবার জন্যে কালাহারে লোক পাঠান। কালাহারের গবর্ণর এই ছয় লক্ষ টাকা সংগ্রহ করিয়া অশ্ব ধোণে উহা কাবুলে প্রেরণ করিয়াছেন।

—সাক্রাজ প্রেসিডেন্সির কোন স্থানে কত আবাদ হইয়াছে এবং কোথায় কিরূপ শস্য হইবার সম্ভাবনা আছে, ইহার সবিশেষ রিপোর্ট প্রস্তুতের জন্যে মান্রাজ গবর্ণর নিমন্থ কর্মচারীদিগের প্রতি আদেশ ক্রিয়াছেন।

—পাইওনিয়ার ক্রে জোয়াকিদিগের ভারি গোঁড়া হইয়া উঠিতে-एन। यथन গ্ৰণ্মেণ্ট সিজিস্থাপন উপলক্ষে প্ৰস্তাব করেন যে, জোয়া-किमिशात पूरे जन मलशिंठिक धार्भन कित्रिक रहेदि, उथन शाहे अनियात भवर्गिया छ । अखारवत थिंड जिन्य पूर्ण थिकान करत्न। जिनि पूर्ण धाकांग कतियां कांछ इन ना। छिनि एए পরিমাণ গ্বর্ণমেণ্টের প্রতি घुना প্রকাশ করেন, সেই পরিমাণ জোয়াকিদিগের প্রশংসা করেন। जिनि उथन वलान (य, शवर्गमण्डे এই ज्ञान প্রস্তাব করিয়া অভিনয় खना। काक कित्राष्ट्न এवः এই क्रथ প্रস্তাব यनू नादि वादी किति छ অসমতি প্রকাশ করিয়া জোয়াকিরা কেবল ইংলিশ গ্রণ্মেন্টকে শিকা मिय मारे, जाहामित्र এই क्रि वावहां व बावा हे छ दाशीय बाजि माटज व निका পाश्या উচিত। পাইওনিয়ার সম্ভতি আবার নিথিয়াছেন যে, ইংরাজ রাজা হইতে যে বন্দুক অপগত হইয়া জোয়াকিদিগের হত্তে পড়ে সে অপহরণ জোয়াকিদিগের ছারা হয় না, গ্বর্ণমেণ্টের নিজের लाक्ता है। क्ता (य मकल योकाता श्राष्ठ गुर्क वााशुङ, ভাহাদের উপর আদেশ করা হইয়াছিল যে, তাহারা, শ্য়ন করিতে যাইবে তথনও তাহারা বন্দুক ছাড়িবে वसूक পার্শ্বে রাখিয়া নিদ্রা যাইবে, কিন্তু যোদারা এই আজা তাহারা সচরাচর যেরূপ শয়ন করিবার श्राज्ञिभानन करत न।। श्रव्य मकला এक ञ्रान वन्तृक माजारेया वार्थ তাरारे कविया निजा याईड এवः वाट्य छात्र आमिया हेश हुनि करत्। পाई अनियात वर्लन रग, यमिछ এই ममूनय वन्तृक भाष छायाकिमिश्त्र इरछ পতिত इय किञ्ज छेश छाशवा চুরি করে नाई। জোয়াকিরা কেন চুরি করে नाई এवः जाशदा চুরি করিয়া জোয়াকিদের হত্তে কেন তার্পণ করে তাহার কোন প্রমাণ পাইগুনিয়ার প্রদর্শন করেন নাই। সে याश्रेडिक, পाইওনিয়ার यে সহনা জোয়াকিদিগের প্রতি এরূপ সদয় इंहेलन इंहात्र कात्र कि? मह्दा विवाप निर्णाख कतिवात करना धरे খেলা তিনি খেলিতেছেন, অথবা ইহার আর কোন উদ্দেশ্য আছে ?

নাত সপ্তাহে কলিকাতায় ছুইটি অমুষ্ঠান হইয়া গিয়াছে। একটি
সন্ধার দয়াল সিংহকে অভার্থনা করা এবং দ্বিতীয় বাবু দ্বিজেন্দ্র নাথ ঠাকুবের বিদ্বজন সভার আহ্বান। উভয় স্থানে বিস্তর ভদ্র লোকের সমাগম
হয়। দ্বিজেন্দ্র বাবু এই শুভকর অমুষ্ঠানটি আজ কয়েক বংসর হইতে
আরম্ভ করিয়াছেন এবং প্রতি বংসর ইহার সমানরপে শ্রীবৃদ্ধি
হুইতেছে।

— রটলেজ নামক এক জন সাহেব ভারতবর্ষে বাঁশ হইতে কাগজ প্রস্তুত করার উদ্যোগ করিভেছেন। আপাতত ইহা বিটীশ ব্রহ্মদেশ ও ভারতবর্ষের মধ্য প্রদেশে আরম্ভ করিবেন।

_এই রূপ রাষ্ট্র যে, গ্রন্থর জেনারেল আগানী মার্দে ইন্দোরে গমন করিবেন। স্বাধীন রাজাদিগের মধ্যে পূর্কে মহারাজা হলকর রূচীশ গ্রন্থিটের অপ্রিয় ছিলেন, এখন সম্ভবতঃ ইনি সর্কাপেক্ষা অধিক প্রিয় হইয়াছেন। গাইকোয়াড়ের দ্বর্গতির পর হইতে এই রূপ পরি-বর্তন আরম্ভ হইয়াছে।

—লাইসেন্স ট্যাক্স ও লবণের শুক্ষ বৃদ্ধির কথা শুনিয়া সার জর্জ ল্যাঞ্চেল অস্থির ইইয়াছেন। তিনি ইয়া লইয়া সম্বাদ পত্রে আন্দোলন করেন আবার হাউদ অব কমন্দেও ইয়া উপস্থিত করেন, কিন্তু ছর্ভাগা জনে ক্যাম্বেল সাহেব এখানে যেরূপ অপ্রিয় ছিলেন, বিলাতেও সেই রূপ অপ্রিয় হইয়া উঠিয়াছেন। তাঁহার চরিত্র দোষে তাঁহার দোষ গুণ মাহিমা লওয়া লোকের পক্ষে কঠিন হইয়া উঠে।

স্থান ডার্ডি নেলিদে বৃটিশ রণতরী ভাসনান হয় তথন লগুন হইতে রণতরী অধ্যক্ষ এই মর্গ্রে তারের সম্বাদ প্রাপ্ত হনঃ " আপনার অধীনে যে সমৃদ্য রণতরী আছে তাহা অবিলম্বে ডার্ডি নেলিস দিয়া কনেষ্টেণ্টি-নোপোলে প্রেরণ করিবেন। যুদ্ধের সঙ্গে কোন সংস্ত্রব রাখিবেন না, তবে জল পথ যেন কেহ অবরোধ না করে এবং কনেষ্টেণ্টিনোপোলে যদি যুদ্ধ হয় তবে সেপানে যে সমৃদ্য বৃটিশ প্রজা আছে তাহাদিগকে রক্ষা করিবেম। জল পথ অবিক্ষম করিবার জন্যে কোন্ কোন্ জাহাজ পাঠা-

ওদিকে যাওয়ার প্রয়োজন নাই। কোথায় গমন করিবেন তাহা যেন কেহ আপাতত জানিতে না পায়।"

— আগামী ৬ই মার্চ্চ তারিখে বাবু কেশব চন্দ্র দেনের কন্যার স্থিত কুচবেহারের মহারাজার বিবাহ হইবে। গত সোমবারে কন্যা কর্তারা কলিকাত। হইতে কুচবেহারে কন্যা লইয়া গিয়াছেন।

—সোয়াতের আথন্দের মৃত্যুর পর ২০শে জান্ময়ারি তারিখে তাহার জাঠ পুত্র মিয়াগুন, তাহার পদে অভিষিক্ত হন। নানা স্থান হইতে পণ্ডিত মুনলমান সমাগম করিয়। মিয়াগুণকে অভিষেক করেন। মহরমের আটই তারিখে অর্থাৎ জান্ময়ারি মাদের দ্বিতীয় সপ্তাহে আথন্দের মৃত্যু হয়। তাহার শব দর্শন করিতে পাছে তারি জনতা হয় এই জন্যে যে রাত্রে তাহার মৃত্যু হয় সেই রাত্রে উহার সমাধি ক্রিয়া সমাপন হয়। মিয়াগুণ তত শাস্ত্রজ্ঞ ব্যক্তি নন, এই নিমিত্ত তাহার মন্ত্রী সক্রপ তিন জন পণ্ডিত মন্ত্রী নিযুক্ত হইয়াছেন। ইহার এক জনকে আথন্দ নিজে নিযুক্ত করিয়া যান। ইনি নিয়াগুণকে শাস্ত্র শিক্ষা দিবেন এবং সদাসর্ব্রদা ইহার সঙ্গে অবস্থিতি করিবেন।

—কাদগারের পতন সম্বন্ধে এই সম্বাদটি এক থানি বিদেশীয় সংবাদ পত্রে প্রকাশিত হইয়াছে। ১৭ই ডিনেম্বরে কাসগার চিনদিগের হস্তে পতিত হইয়াছে। কাদগারের আমির বেগকুলিবেগ পলায়ন করিয়াছেন। তিনি যে কোথায় গমন করিয়াছেন তাহা কেই জানে না। তাহার পরিবার্ম্থ মহিলায়া কশিয় রাজ্যের মধ্যে নার্বিউপ্প নামক ত্র্যে আশ্রয় লইয়াছেন। এতভিন্ন চিনদিগের অত্যাচারের ভয়ের ত্রই হাজার ম্সলমান এই দুর্গে গমন করিয়াছে। এই তুই হাজার লোকের মধ্যে পাঁচ জন তুর্ক আছে। এই পাঁচ জন তুর্ক দৈন্যদিগকে যুদ্ধ শিক্ষা প্রাদানের নিমিত্ত ইয়াকুর বেগের নিকট প্রেরিত হয়। এই তুই হাজার লোক রাশিয় রাজ্যে উপস্থিত হইলে রূশ গবর্ণনে উ তাহাদিগকে নিরম্ভ করিয়া প্রহরী দিয়া টকমাক নামক স্থানে প্রেরণ করেন। চিনেরা ক্রমে কাদ-গারের নামা স্থান অধিকার করিয়াছে।

= किन्दां छोटो ने अक जन मञ्चास वास्ति करना है कि स्नार्थान इंदे मञ्चाम श्राश्च श्रेयाद्वन (य, श्राञ्जिक निकालाम करन्छि किलालाद्व अकि উপনগর অধিকার করিবেন। ২৪শে তারিখে তাহার এই স্থানে প্রবেশ করার কথা আছে এবং দেখানে ছুই এক দিনের মধ্যে সন্ধি शार्थन रहेरव। य ममूमय मर्ख मिक शार्थन रहेराज्य जार्था जूर्कि উচ্ছिन्न यारेदि। देशां जुर्कित कार्म ७ वहेम मह शूर्क जार्स्मनीया क्रमिनिशक वर्षन किविष्ठ इट्रेव। তারে আরো সদাদ আসিয়াছে যে क्रिया देश ছाড़ा ছय थानि लोह व्यवजी ठाहियां ছে। ञ्चलान देशां এবিষয়ে জিদ করে তাহা হইলে তিনি ইহা ডুবাইয়া দিবেন। কার্যো আছেন এবং যাহার। এ সমুদয় বিষয় বুঝেন, তাহাদের বিবেচনায় তুর্কিতে ইংরাজদিগের যে আধিপতা ছিল তাহা রূশিয়র। সমূলে উৎপাটন कतियाछ। देश्तां जाजित स्व लास धरे हुन्न गिजि हुर्रेस रेशांज शृथिवीत जाशत लाव किन, दांध इश देशतां जा जा जा वहां इहेरवन। रश रेडे द्वाप्तत्र यात कान जाि कत्रीन काल रन नारे।

—গবর্ণর জেনারেল ১০ই মাচ্চ তারিখে কলিকাতা পরিত্যাগ করিয়া পশ্চিমে গমন করিবেন। তিনি সাহারণপুর, রুডকি, প্রভৃতি স্থান দেখিয়া ১লা এপ্রিলে সিমলায় উপস্থিত হইবেন।

—বেষোই টাইমদ তারে সম্বাদ প্রাপ্ত হইয়াছেন যে, রুশিয়া ও তুর্কিতে দিন স্থাপন হইলে লড বিক্সফিলড্ রাজমন্ত্রিত্ব পদ পরিতাগ করিবেন। তিনি কর্ম পরিতাগ করিলে লড হামিলটন আইরিশ নেক্রেটরি হইবেন এবং তাঁহার স্থানে জেমন্স লোডার সাহেৰ ইপ্রিয়ান আগুর সেক্রেটরি হইবেন।

— ২রা ফেব্রুয়ারি তারিথে লর্ড সালিশবরির সঙ্গে নিধাত পাশার সাক্ষাৎ হয়। মিধাত পাশা প্রকাশ করেন যে, তুই বৎসর হইল কাব্লের আমির কনষ্টেণ্টিনোপোলে এক জন দূত প্রেরণ করিয়া প্রস্তাব করেন, যে, তাঁহার সমুদ্রে গমন করিবার একটি পথের প্রয়োজন এবং এই পথ প্রাপ্ত হইবার জন্যে বৃটিশ গবর্ণমেন্টের বিপক্ষে তাঁহার রুশিয়ার সঙ্গে যোগ দিতে হইতেছে।

—নাগা জাতির পতন অনেক দিন হইতে জারম্ভ হইয়ছে। বোধ
হয় এই বার ইহা সম্পূর্ণ হইবে। বর্ত্তমান মুদ্ধের পূর্বের নাগা পর্বতের
সামাগুইটিং নামক স্থানে ইংরাজদিগের হেড কোয়াটার এবং ওকা
নামক স্থানে তাহাদের সব ডিবিসন ১লা হেড কোয়াটার ছিল। বর্ত্তমান
মুদ্ধে এই ছই হেড কোয়াটার পর্বতের অভ্যন্তরে স্থানান্তরিত হইতেছে।
এখন অবধি নাগারা আন্তে পৃত্তে আবদ্ধ হইবে।

— অন্ত্রিলিয়াতে যত লোকের বসতি তাহারা প্রত্যেকে গড় পড়তায় মাল্রাজ তুর্ভিক্ষের জন্য অটি জানা করিয়া চাঁদা দিয়াছে। যদি অপর স্থান হইতে এই হিসাবে চাঁদা সংগ্রহ হইত তাহা ইইলে মাল্রাজে যত শস্য আমদানি হয় প্রায় তত টাকার আমদানি হইত।

—মাণ্টাতে ইংরাজদিগের ৪৮২৮ পদাতিক, ১৪২১ জন গোলন্দাজ, ২১৬ ইঞ্জিনিয়ার অর্থাৎ সর্বা সমেত ৬৪৬৫ জন দৈন্য আছেন, এবং জিবেলটারে ৩৪৪০ পদাতিক, ১০৫০ গোলন্দাজ, ৪৩২ ইঞ্জিনিয়ার অর্থাৎ সর্বা সমেত ৪৯২২ জন দৈন্য আছেন।

—কলিকাতায় এই রূপ জনরব উঠিয়াছে যে, ল্ড ইউলিক ব্রাউন ব্রুমদেশের চিফ কমিশনার হইবেন। —আমেরিকার নিউইয়র্কে রোম্যান ক্যাথলিক ধর্মাবলম্বীরা একটি ত ভজনালয় প্রস্তুত করিয়াছেন। এই ভজনালয়টি তিন বৎসর প্রস্তুত হইয়ছে। ইহা ৩০৪ ফিট লম্বা। ইহাতে ১০০টি গবাক্ষ আছে এবং ইহা প্রস্তুত করিতে ৩০০০০ টাকা ব্যয় হইয়াছে।

= বিলাতি এক থানি সম্বাদ পত্রের মতে ভারতবর্ষের এত তুর্গতির কারণ রৌপ্যের মূলা হ্রাস হওয়া। তিনি গণনা করিয়া দেখিয়াছেন ফ্রে যদি আমেরিকায় রৌপ্য মুদ্রার ব্যবহার আবার প্রচলিত হইত তাহা হইলে রাজস্ব বৃদ্ধির নিমিত্ত গবর্ণমেণ্টের লবণের শুক্ষ বৃদ্ধি করিতে হইত না, এবং ভারতবর্ষে লাইদেল ট্যাক্স নির্দ্ধারিত হইত না।

—আগামী ইংরাজী মাদের ১ই তারিথে কলিকাতা বিশ্ব বিদ্যালয়ের কনভোকেশন হইবে। বাইশ চ্যান্সেলার সভাপতির আসন গ্রহণ ক্রিবেন।

— ডাক্তার শোরী ব্রুমোহন ঠাকুর আর ছুইটি মেডেল প্রাপ্ত ছুইয়াছেন।
ইহার একটি ভূতপূর্ব্ব পোপ মানব লীলা সম্বরণ করিবার পূর্ব্বে তাঁহাকে
উপহার প্রদান করেন, অপরটি স্কুডেনের রাজার প্রদত্ত। ইংক্রে
একটি রৌপ্যের অপরটি স্বর্ণের।

— সিপ্রি যুদ্ধে যে জোয়াকি দলপতি বীরের নাায় যুদ্ধ করিয়। নিহত হয় তাহার নাম রাকনমিয়া। ইনি প্রায় বৃদ্ধা হইয়াছেন এবং জোয়াকিনিপের একটা সম্প্রদায়ের উপর ইহার অতিশয় আধিপত্য ছিল। এই রাপ রাষ্ট্র যে আবাজি নামক স্থানে এই ব্যক্তি ইংরাজদিলের অনেক গুলি কুলিকে হত্যা করে, কিন্তু অনেকে আবার ইহাকে এ বিষয় নির্দোষী মনে করেন। তবে এ ব্যক্তি এই কার্য্য করে বলিয়। কাবুলের আমির যে তাহাকে সমাদরে গ্রহণ করেন সে সত্য কথা। আবার যে দিন উপরিউজ ঘটনা হয় তাহার পূর্বে রাত্রে ষাহারা কুলিদিগকে হত্যা করে তাহার অনেকে ইহার গৃহে অবস্থিতি করে।

লিদ্বন আকাডেমি অব সায়েন্স নামক বিদ্যালয়ে সংস্কৃত শিক্ষা আরম্ভ হইয়ছে। সংস্কৃত ক্রমে ইউরোপের অনেক রাজ্যে প্রচলিভ হইতেছে। সংস্কৃত যাহারা আদর করিয়া অভ্যাস করেন তাহার। সম্ভবতঃ আর্ঘ্য জাতিকে আদর করিবেন এবং যদি ভারতবর্ষবাসীর। সংস্কৃত ভাষা অবলম্বন করিয়া ইউরোপের অধিকাংশ জাতির সঙ্গে আত্মী যাতা করার যত্ন করেন, তাহা হইলে তাহারা সম্ভবতঃ উহাতে কৃতকার্ঘ্য হইতে পারেন।

—জর্মেনী ক্রমে আপনার দৈন্য দল বৃদ্ধি করিতেছেন। সম্প্রতি দৈন্য দল বৃদ্ধি করিবার জন্যে জর্মেন গবর্গনেণ্ট অতিরিক্ত দেড় কোটী টাকা মঞ্জুর করিয়াছেন। যে পরিমাণে অপর জাতি দৈন্য দল বৃদ্ধি করিতেছে, জর্মেনী আপনার শ্রেষ্ঠত্ব রাখিতে দেই পরিমাণে দৈন্য সংখ্যা বৃদ্ধি করিতেছেন, তবে বোধ হয় জর্মেনী যত দৈন্য সংখ্যা বৃদ্ধি করিতেছেন, তত্ত জর্মেনীর নিপাতের পথ প্রশন্ত হইতেছে।

—এই রপ জনরব যে তুর্কেরা এই নিয়মে দলি স্থাপন করিতে
সম্মত হইয়াছে। সার্কিয়া স্বাধীন হইবে, মণ্টিনিগ্রো, অণ্টিবার ও
কাটারি নামক হ্রদের কিয়দংশ প্রাপ্ত হইবে, এতদ্ভিন্ন নিক্সিক ও ক্ষ্যু
নামক স্থান প্রাপ্ত হইবে। যে পর্যান্ত তুর্কি মুদ্ধের ক্ষতি পূরণার্থে
২০০ কোটী টাকা না দিবেন সে পর্যান্ত ক্রশিয়রা বটম,কাস এবং
আর্জক্রম অধিকার করিয়া থাকিবে। ষ্টেটশ দিয়া ক্রশিয় রণত্রী
গমনাগমন করিতে পারিবে। বলগরিয়ায় স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রচলিত
হইবে এবং তুর্কি তথায় ইউরোপীয় রাকাদের সম্মতি ক্রমে এক জন্
খন্তান গবর্ণর মনোনীত করিবেন। এই রাজার অধীনে থে স নামক
উপদেশ থাকিবে না। ইহার সীমা বন্ধান পর্বত পর্যান্ত হইবে। রশা
সৈন্যের কিয়দংশ কনেষ্টেণ্টিনোপোল সহরে অবতরণ করিবে ও গ্রাপ্ত
ডিউক সন্ধি স্থাক্ষর করিবেন। সম্ভবতঃ রুশিয়া পূর্বের্ব যেরূপ নিয়মে
তুর্কির প্রণা ভিক্ষা দিবেন দ্বির করেন এখন আর তাহা করিবে না
ব্যান্তের বিডেনে রাজ সভাতে হয় ত এরূপ স্বেচ্ছাচারী সন্ধি স্থাপনে
সভোরা সম্মত হইবেন না।

্লাজ হইতে পারে। কিন্তু ভারতবর্ষবাদীদিগের বিস্তর ক্ষতি হয়।
ভারতবর্ষে বে এবার এই ভারানক কর হইল তাহার প্রধান কারণ
এই মিথ্যা জনরব।

= লোকের রূণিয়দিগের উপর এই রূপ ভয়ের উদয় হইয়াছে য়ে,
তাহারা জানে না, রূশিয়রা কোথায় গুপুভাবে লুকায়িত রহিয়াছে
এবং কবে ভারতবর্ষে উপস্থিত হয়। সম্প্রতি ত্রিনোকমলিতে এক
খানি জার্মেন রণতরী উপস্থিত হইবে। এই জন্যে বোম্বাইয়ে রাষ্ট্র হয়

য়ে, রুশিয়রা ভারতবর্ষ আক্রমণ করিবার জন্যে তিন খানি রণতরী
প্রেরণ করিয়াছে। ইংরাজদিগের বুদ্ধির ভুলে এবার রুশিয়দিগের পদ
বৃদ্ধি হইল।

हरक इराव थाउ

HE AMRITA BAZAR PATRIKA.

DALCUTTA, THURSDAY, FEBRURAY, 28, 1878.

The proposed scheme for the establishment of Appellate Benches in the Mofussil of Bengal has been forwarded to the Secretary of State for sanction.

The University of Calcutta is going to introduce considerable changes in its examinations. The number of optional subjects for the F. A. and B. A. is to be increased, and the passing marks in all subjects, except the most important, are to be abolished. We are also told that Mental Philosophy is proposed to be abolished from the F. A. Course, and Logic is to form an optional subject of examination. This is a move in the right direction.

Babu Ram Shanker Sen has retired from the Legislative Council after an honorable service. The vast maffasil experience of the Babu has been of great use to the Government, and his services should have been retained. Nawab Meer Mahamud has likewise retired. This gentleman is the first Massulman who had the courage to oppose Government measures on the Legislative Council. Moulavee Abdool Latief as a Government servant had his hands tied.

An exhibition of agricultural products and manufactured articles will be held in Poona in May 1878, for the encouragement of the agriculture and manufactures of India. Prizes will be awarded by the Committee on the occasion to those whose manufacturing skill and industry satisfy the board of examiners. The articles sent in for competition will be sold off to purchasers if the exhibitors have no objection. The articles to be exhibited should be sent in to the Town-Hall in Hirabag, before the Exhibition is opened on the 1st of May. It is proposed to send some articles, if possible, the notice being so short, from the Albert Temple of Science.

We have received the following appeal in the Lokenathpore case made by Troylokhnath Biswas and Ramgutty Kahar convicted by the Joint-Magistrate of Krishnaghur.—"Being too poor to defray all the expenses for making an appeal to the Sessions Judge of Nuddea, against the sentence of conviction, passed by Mr. Taylor Joint-Magistrate of Krishnaghar, we are obliged to appeal to the generous public for pecuniary help. The people of Krishnagur have already given us help in a variety of ways and we ardently expect that similar help would be accorded to us by the patriotic and generous." We hope the appeal will meet with response from the generous public.

The appointment of the younger brother of the Maharaja of Darbhanga, as we said the other day, is just such an act which is calculated to throw doubts upon the sincerity of the Government. Of course the younger Maharaja is a native of India, but the Government very well knows what the nation actually wanted. Mr. Eden, who never lets slip an opportunity of professing friendship for the people, has simply deprived them of a gift by a stroke of policy, which the British Government promised them, we believe, in all sincerity.

But while this much coveted post has been given to the young Maharaja, who will probably resign his post when compelled to work as civilians are expected to do, the Police Magistracy of Calcutta has been offered to Mr: Amir Ali. Here again the post has been given to a native, previously occupied, since the days of the late Babu Kissori Chand Mittra, by Europeans. But if it was resolved to give the post to a native, a Hindu ought to have been selected, as Calcutta, if it is anything, is a Hindu Town. If the object was to give the post to a Mussalman, surely Moulvie Abdul Lateef, who by his talents, has reached the leading position in his community, and who had already filled the post so efficiently, is decidedly the best man for the place. If a native Barrister was wanted, there are such in Calcutta who are well-known throughout the country and who are older and have greater experience than Mr. Amir Ali. It is for such acts that people attribute favoritism to Mr. Eden.

The fourteenth annual Conversazione of the Mahomedan Literary Society came off as usual with great eclat. The Town Hall was literally filled with an immense number of visitors, both Native and European. The hall was very tastefully decorated, and the collection of the rare and curious articles placed on the tables attracted general attention, and elicited much applause. The experiments in electricity and chemistry were also very interesting. His Excellency, the Governor General, graced the meeting with his presence, and

appeared to be greatly pleased with what he saw and heard. All credit is due to Moulvi Abdool Latiff Khan Bahadoor for bringing about such a brilliant gathering.

The local dailies publish the full proceedings of the monster meeting held recently at Bombay to adopt a Memorial to the House of Commons on the subject of the Trades License Tax and the manner in which legislation is conducted in India. The vast arena in Wilson's Great World Circus, which is capable of holding between three or four thousand people, was crowded, many being compelled to stand on narrow ledges at the edge of the Circus, and at times it even appeared probable that some accident would happen. Like all public meetings, the present, we are told, was exceedingly picturesque, alike from the variety of costumes and the rich variety of colour represented in the various head dresses. A circle of flags of all nations, suspended round the roof of the Circus, heightened the beauty of the scene. The meeting throughout was of an exceedingly enthusiastic description, several of the speakers indulging in the most delightful free hitting. The principal speakers

on the occasion were Messrs. Maclean, Vugwan-

das Madhowdas, Kitterdge, Wood, Kemp, Mowat,

Geary, Morarji Goccooldas, and Raghoonath Khote.

A correspondent, the same who first gave the information through our columns to the public of the death of Jung Bahadoor, supplies us with another piece of sensational intelligence. The thana of Kaliagunge, in District Purnea, is just now, it is said, the scene of frequent, what is called, daydacoites. A band of armed men, and women too, some on horse back and some on foot, are committing wholesale depredations. They roam about freely, and the police, it seems, does not care to oppose their doings. They demand contributions from the inhabitants, and beat those who refuse to furnish them with supplies. On the 13th of February, Wednesday, at about 8 o' clock in the morning, a band attacked some Bengali gentlemen, at Billa'saree, in the District of Darjeeling. Some money satisfied them and they left the place. But immediately after, a band of amazons composed of about fifty well-armed females, came to the same place, and demanded a further contribution. Ou being told that their male relations had already exempted them from further taxation, they began to break open the doors and boxes, and carried away about Rupees 150. If questioned about their nationality, they say that they are inhabitants of Room (Constantinople) and are Mussalmans, but being driven from their country, have come hither to settle. We publish the facts as we have got them, and of course cannot vonch for their accuracy. Our correspondent is inclined to believe that they have come from Nepul. ____

A correspondent sends us the following account of an indigo oppression case. "There is an indigo factory at Kanthapara in Dacca, belonging to Mr. D. N. More. For a long time the factory was closed, but very recently it has been again set agoing, and three Europeans have been entrusted with the charge of managing it. On the 7th of Falgoon last one of these European managers is said to have forcibly ploughed the land belonging to the ryots of Dhooliajani. The next day about 60 or 70 lattials proceeded to the village of Nickashee, and forcibly ploughed the fields belonging to the ryots of that village. On their way back to the factory, they are alleged to have set fire to the houses of two of the ryots of Dhooliajanee. One of these ryots was also bound hand and foot, and forcibly carried to the factory. A Mahomedan Moonshee was passing by the factory, and he was arrested and placed in the custody of the factory people. Information was at first given to the police, but the Sub-Inspector being away from the Station, the Deputy Magistrate of Manickgunge was applied to, who at once held an investigation on the spot. After taking down the statements of one of the complainants, and the depositions of some witnesses, be ordered for the arrest of six of the factory people. Purwanwas have been also issued for the arrest of the remaining offenders. The Deputy Magistrate has no jurisdiction over the European managers of the factory, but he has sent a strong report against them, recommending their immediate arrest." Now that Mr Smith is the Commissioner of Dacca, we doubt not that justice will be done.

THE LOKE NATH PORE CASE.

It is the old story over again. Two men Troylakya Nath Biswas and Ramgati Kahar made certain statements to the Joint Magistrate of Chooadanga which sought to implicate Mr. Glascott of the Loke Nathpore indigo-factory. Mr. Glascott was not put on his trial, but Troylakya and Ramgati were prosecuted for making a false statement before a public officer and convicted. So in the celebrated Meherpore case, the witnesses who spoke against the Assistant Magistrate, charged with committing an outrage upon a female, were vigorously prosecuted, but the jury acquitted them. So also

in the Fenua case, the ryots, fired at by the planters, were prosecuted and imprisoned.

Ramgoti Biswas owed Mr. Glascott some money, and the corpse of the former was found in a lake at a short distance from the factory. Rumour says that he went to the factory to adjust his accounts, and found Mr. Glascott in a very bad temper of mind on account of the illness of his wife who was then confined. Ramgatis' inability to pay on the spot exasperated Mr. Glascott, and he caught hold of his neck and pressed him hard against the wall. The man died of suffocation, and Mr. Glascott had him thrown in the lake near Boonapara. This is the bazar gup; but let us proceed at once to the facts elicited by judicial inquiries.

The first information of the whereabouts of Ramgati was conveyed by Mr. Glascott to Mr. Skrine, the Joint Magistrate of Chooadanga, in a letter. The following is the letter:—

My dear Skrine, Ramgoti Biswas, the Tehsildar of Kooltollah has been found over Rs. 400 short of his collections, and I have a case ready to bring against him in your court to-morrow. This morning at daylight, his horse was found near the Boonapara line and a saddle, a bridle and some clothes, I suppose belonging to him, under a tree, near the place; so something is up. I have given information to the police at Damarhuda.

Yours sincerely,

This circumstance coupled with the finding of the dead body, aroused the suspicion of Mr. Skrine against Mr. Glascott, and the suspicion was strengthened by the statements of Troylakya Biswas and Ramgati Kahar, and other "corroborative evidence." What this other corroborative evidence was, has never been disclosed. The dead body was found in circumstances which must give rise to all sorts of surmises. The great point to settle is, whether Ramgati Biswas committed suicide, or was murdered. His body was found deliberately tied to pieces of wood in deep water. He had his shoes on, and his piran too, the pocket of which contained some money.

The native Doctor who examined him, recorded it as his opinion that, he was murdered by strangulation. The Civil Surgeon, who examined him subsequently, came to altegether a different conclusion. The native Doctor found marks on his neck, the Civil Surgeon found none. It must be admitted that the testimony of the Civil Surgeon is of greater weight than that of the Native Doctor, but then it must be admitted too, that the native Doctor examined the corpse when it was fresh, and that when the Civil Surgeon examined it was already a mass of putrid flesh.

Whether a man, who wishes to commit suicide, can go step by step into deep water, a hundred yards from dry lands and then faster himself deliberately to a piece of wood, is more than we can tell, for we never made the experiment. Perhaps the Civil Surgeon did, and he knows best. The case was conducted with vigor by Mr. Skrine in person. All the factory servants arrested, with the exception of Mr. Gl. Shortly after, these men were released one another, and the Magistrate came to the contrastion that, Ram Gati, after all, committed suicide and submitted a report to that effect to the Chief Magistrate of the District, Mr. revens.

There was quiet in Nuddea, though people implicitly believing the bazar gup, grumbled in si lence. The charge was brought against the Ma gistrates, in social circles, of having let off Mi Glascott, on the ground of his being a white Letters to this effect also appeared in Newspapers, and the matter would have ended there. But the authorities took it into their head to rake up old matters, and bring a criminal charge against Troylakya and Ramgoti for having made false statements. Who is the author of this false move we know not, some people say it is the doing of the Government itself, some bring the charge against Mr. Stevens. But we are inclined to believe that Mr. Stevens does not belong to that class of Magistrates who delight in mischief. We know positively that, in the case of Babu Shoshi Bhushan Mozumdar, the Government asked him to file an appeal, but he had declined. It is not however of great moment who directed to comence the prosecution, save that it would be painful to believe that an impartial and able officer Like Mr. Stevens should have any hand in the matter.

It is quite true that this prosecution gave the grumblers an opportunity, of proving their case against Mr. Glascott. But the mischief is, practically they had no such opportunity; because the report of Mr. Skrine was not allowed to be made public. This part of the case presents an extremely ugly feature. Mr. Skrine to whom the statements were made, is now in Madras. His deposition was essential for the prosecution. But he was away and yet the case must be proceeded with, and he was examined by Commission. The the prisoners are convicted a pon the statement of a man who was only examined by Commission and had to state facts long after they had occurred

The report of Mr. Skrine, drawn up on the spowould have been a more satisfactory evidence But that report was withheld, under section 124 which entitles an officer, to withheld communications, when he considers that public interest would suffer by the disclosure. Here is another instance of the weakness of the Judicial, and omit

potence of the Executive, in this country. When he considers that public interests would be jeopardized by the disclosure, no High Court Judge could compel an officer to disclose a communication. But does not simple justice demand that the accused should have every opportunity of proving his innocence? The prosecution declines to disclose facts which the accused demands to be made known for his defence. The prosecution declines the disclosure on imperial grounds, and then the trying officer should have dismissed the case at once. What imperial interests are concerned in the report of a murder or a suicide case we know not. The fact, however, remains that the accused were sent to jail without getting the opportunity of proving their innocence.

Another ugly feature of the case was disclosed by the cross-examination of Mr. Skrine. How they carry things in Madras we know not, but the Madras official, who examined Mr. Skrine, has queer notions of his rights and privileges. Mr. Skrine was cross-examined by Commission, and he disallowed the questions at his sweet pleasure without following any principle whatever. Now, for instance, the question, whether Mr. Skrine saw Mr. Glascott on that day, was not allowed. And the question, "did you not make them drink wine and spirits? [with a view to make them retract their statements]" was allowed. We give some specimens

below :-

Q. Do you remember having sent a telegram to Johori Babu (Inspector of Police) after you heard of Ramgati's A. Disallowed.

Q. Why did you think it necessary to hold a local in--vestigation in person?

A. Disallowed.

Q. Did you see Mr. Glascott that day? Disallowed.

Q. Had you any conversation with him touching the murder or supposed murder of Ramgati ?

A. Disallowed. Q. Were any of the Tactory Amlas present when you

- held the local investigation's A. Disallowed.
- Q Did you give any injunction that the Police should not examine Mr. Glascott? A. Disallowed.
- Q Was Mr. Glasscott at all examined either as an accused or as a witness during the whole course of this investigation ? A. Disallowed.
- Will you swear that you exercised no threats in making them retract their former statements? A. Disallowed.
- Q. Can you swear that you exercised no threat to make them retract their former statements? A. Yes, I can swear.

Q. Did you not make them drink wine and spirit? A. No, I did not.

- Q. Did you not hold out hopes of reward in case they retracted their former statements? A. No, I did not.
- Q. Did you not threaten some persons whose statements you thought proper to take down with drawn knife and with pistols pointed? A. Disallowed.

Some of these questions suggest serious charges ainst Mr. Skrine, and it would have beeen an act of pure mercy to allow him to answer them. Take, for instance, the last question. We could never make up our mind to believe that any sane man, much less a man like Mr. Skrine, could act in the way attributed to him in this indirect manner. Yet from the very fact of his not being allowed to answer the question would suggest that he actually presented a pistol and so forth.

It pains us in a manner we can hardly express, to mink that two such men as Messrs Stevens and Skrine, whom we have always held up as models for other Executive officers in India to imitate and follow, should have anything to do in a case like this. We shall yet continue to hope that there is a mistake somewhere. Of Mr. Glascott we say nothing and know nothing. He was not put upon his trial and Heaven alone knows whether Ramgati was mucdered or he committed suicide. We only think that the prosecution of the two accused, followed as it was by arbitrary acts enumerated above, was a great mistake, and has given rise to much discontent.

> -----OUR BLUNDER NUMBER THREE.

It was a very great blunder to object to the payment of road-cess on the ground of its nonimposition upon the ryots. The British Indian Association should have relied entirely upon the covenant of the permanent settlement for the protection of the rights of the zemindars. But they went to strengthen the bulwark, which was strong enough to protect them, by other onter-works; and thus furnished their enemies with a base to operate against them. The Government wanted to impose a cess upon the zemindars of Bengal, and the British Indian Association took, among others, the ground that, as land was the joint property of the ryots and the land-holder, the latter alone should not be made to pay the cess. The Government took immediate advantage of such a great blunder, and brought the ryots under the operation of the cess. Thus this disaster we brought apon us by our own mistake. Our blunder number two was, to follow the cry

raised by Anglo-Indians, against an income tax. We did our best to knock the tax on the head, indeed we were chiefly instrumental in bringing about its abolition; and Lord Lytton now refuses to resuscitate the dead income tux had existed.

people would have been now impossible. The imposition of the income tax was followed by a Parliamentary Committee of Finance. And if the European community had been taxed, the retrenchments, for which we have been clamouring, had been long ago made. As long the natives alone paid the taxes, 'British interests' were quite secure; and Europeans in the country, who alone have any voice in the administration of the Empire, have 10 interest in moving for the reduction of expences, expences which only fatten them. An income tax not only brought the two races, but the officials and non-officials together; and such a combination was quite capable of forcing any financial reform upon the Government.

And we fear we are going to commit blander number three, if we have rightly understood the programme adopted by the promotors of the pub. lic meeting to be held on Saturday, to consider imperial taxation and expenditure. We believe the promoters will take the same attitude which the leading members of the British Indian Association did in the discussion; and in our humble opinion, that attitude is full of peril to our best interests. We pointed the first two mistakes to our countrymen; our voice was drowned in the general clamour in the begining, though it was heard at last. We shall again raise our humble voice against this third blunder; we only beseech a

calm and dispassionate hearing.

Sir John Strachey has sought to establish that, the Government is fairly entitled to raise money by taxation, and that the best way of raising it, would be by a tax upon trades and commerce. He has admitted during the course of his speech that there is yet room for retrenchment. The British Indian Association has precisely taken the same attitude with a slight difference, in this discussion. It admits that there is room for retrenchment, it admits that the Government has established a claim for imposing fresh taxes, and it admits that the best way of doing it, would be by the imposition of a Licence tax. The British Indian Association has, therefore, supported the Government policy throughout. The only objection it raises, is not against the principles of the taxation measures, but against some of their details. The Government would make the tax permanent, or would not give a pledge that it would not be permanent; and the British Indian Association would demand such a pledge. This is the only difference which exists between the British Indian Association and the Government on the subject.

A policy which supports the imposition of such a hanstorm of taxes, in an already heavily taxed country, must be inherently wrong, In short, if the Government were to announce today in a vagne way that, it would abolish the tax, as soon as circumstances would permit it, the account would be in perfect accord with the views of the Association. The Association is then as much responsible, as the Government itself is, for the new taxes imposed through the length and breadth of

the land.

It was a master-stroke of policy, on the part of Sir John Strachey, to admit that, there was yet room for retrenchment, and then deplore the inability of the Indian Government to cope with the Home Authorities. Such a frank admission had two purposes to serve; and both these purposes have been admirably served. Its one object was to make a common cause with the people by giving them confidence, and enlisting their sympathy. Its other object was to divert the attention from the real point at issue. As regards the first object, the British Indian Association sympathises with the Government, and has given its cordial support in the imposition of the taxes. As regards the second object, the Association is busy in preparing schemes for retrenchment, forgetting altogether that an oppressive tax has been already imposed and that, while they are busy calculating the Home charges, the tax gatherers are being let loose.

We have to know what is the good of urging upon a step, that the Government itself professes bent upon to take. The Government declares that it has reduced its expences and will urge upon the Home Government to reduce theirs. It would be therefore labor lost to urge to do a thing, which, it has been promised by Government of its own accord, would be done. Such a demonstration may have for its object the strengthening of hands of the Government, in its endeavor to influence the Home Authorities for reducing their demands upon India. But if a demonstration is at all necessary, would it not be best done by throwing obstacles in the way of the imposition of new taxes? The taxes imposed, the necessity and motive for retrenchment will disappear. To support the imposition of taxes and pray for the reduction of expenditure, is to quench the fire of the steam car and then urge it to move on.

If the attempt of Sir John Strachey, to enlist the sympathies of the people, and divert their attention from the real point at issue, is a master stroke of policy; we may, if we are wise, take our stand upon the very same ground, which has so admirably served the purposes of the Financial Minister. The minister admits that there is yet room for retrenchment. When he admits this, he admits also that the Government has no right to impose fresh taxes. If after

reducing all the expences capable of reduction, the Government still wanted money to meet its legitimate requirements, then alone it would be entitled to raise money by fresh taxation; but not before. This ground is unassailable.

The plea that the India Government has no control over the action of the Home Government, is not only absurd, but unworthy of any Government: The Indian Government has no control over the action of the Home Government, but it has the absolute power of taxing the dumb millions at its sweet pleasure. Therefore, the Indian Government, robbed by a greater power, seeks to replenish its purses by taxing the innocent people. It is neither fair, just, nor generous. It is like a zemindar robbed by dacoits, robbing his ryots, to make up his

The plea is absurd likewise. It is represented to us that the Government of the country cannot go on, if taxes are not imposed. Now suppose. if the Home Authorities were appealed to, on the same ground, would they still go on in their course of extravagance? Does not any threat to the safety of the Empire rouse the whole of England? Has not the British Power declared often and often that England would stand or fall by India? Such a representation that, the Government could not be carried on until they curbed their expences, would have an electric effect upon the Home Authorities. But such a representation would never be made, despite all your monster meetings, unless the Indian Government found difficulty in raising new taxes.

We talk of retrenchment, but it is not in the power of any man outside the mysteries to find out, whether actually any retrenchment has been made or not. It is the simplest thing possible for the Government, constituted as it is, to shew either a deficit, or a surplus, extravagance or retrenchment, by a manupilation of figures. If, after a huge demonstration, the Government says that retrenchments have been made, having no means to contradict the statement, we must remain satisfied with that answer. What we mean by retrenchment, we shall explain presently; but what. Government means by it has been already explained by Sir John Strachey. Sir John Strachey emphatically says that retrenchments have been made in the civil department, and no further retrenchment is possibe in that direction. We have shewn in our last that the expences of the Civil Department have increased 33 per cent. within the course of seven years. So, practically retrenchment, according to Sir John, means the increase of expences!

If you press very much for the reduction of the Home charges, the same sort of retrenchment may be made in England, as Sir John Strachey said was done here. In our simplicity, we mean by retrenchment, reduction of taxes, and not reduction of expenditure. If, in spite of retrenchments, our taxes are not reduced, we care very little whether the retrenchments are made at all or not. What, if the Government reduces the Home charges and still continues to tax men with incomes of one hundred, and to exhaust the country by its heavy land assessment?

The reduction of expenditure is the look out of the Government, which has a separate existence from the people which maintains it. Our lookout must be to save us from the hailstorm of taxes. which have been hurled at us. We care not whether the Government reduces expenditure or not.

We want the reduction of taxes.

It is all very well to calculate the interest that we are to pay to the defunct East India Company, the costliness of our military system, the charges borne by us, which ought to be legitimately borne by the ruling country &c. &c. It is all very well to make learned speeches, or write learned memorials on these subjects. But what of this shower of taxes? That is the point at issue. That ought to be our first concern, and our attention has been diverted from that. It would be simply ridiculous to sit in judgment upon interminable questions, while the tax-gatherer has been let loose in the country, to prey upon the very poorest of the population. Have these learned men any idea what a tax of 2 per cent upon incomes of Rupees one hundred mean? Such a tax upon incomes of Rupees two hundred was imposed eleven years ago. but it proved so very oppressive that the Government was forced in the next year to modify it and raise the incidence of taxation. But past experience has not taught our Government wisdom. If there was oppression in the year 1866-67. when the minimum income taxed, was two hundred, the oppression would be hundred-fold intensified now that the minimum has been lowered to only one hundred. The question of the Horse Guard, and other Military charges is no doubt a large question, a stupendous question, a question of gigantic magnitude, but what of the hailstorm of taxes that have been imposed? We think therefore that the nation ought to take a firm stand on the ground that, the Government has no right to fresh taxation when it admits there is yet room for retrenchment. And failing this, to advocate a tax which would fall upon the rich and avoid the poor.

SCRAPS AND COMMENTS.

The Hon'ble Rivers Thompson, c. s. 1. Chief Commissioner of British Burma has been appointed to succeed Sir Edward Bayley. It is said Lord Ulicke Browne will succeed him.

A correspondent at Hyderabad says that Sir Salar Jung has made great reductions in the Police department—the beginning of extensive reductions which the Minister is bent on introducing into the Nizam's territories. A large number of police officers of various grades and departments have been cast adrift, and the Minister is besieged with petitions from those who are without employment.

Mr. Bradford Leslie has issued a circlular on medical consulation fees, which informs all the employes of the East Indian Railway Company that in all serious cases involving surgical operations, and the risk of losing life or limb, or in critical cases of illness of any of the Company's Medical servants, it is competent for the Company's Officers to call in other medical advisers, and the Company will pay the fees that may be agreed upon for such consultation. This must be understood to apply to the servants drawing salaries of Rs. 300 per mensem and under.

In their indigo report, Messrs J. Thomas & Co. give the result of the crop of last year, as far as can be ascertained from the invoices of European indigo, and the weights after inspection and sale of native indigo, of which there was no reliable invoice. They make the total quantity 151,200 maunds, or about 14,000 maunds in excess of the figures printed at the close of the manufacturing season, on the 26th Britian October. It is to be remarked that while Great Britain has taken only about 1,000 chests in excess of last year, and Germany, Holland, Belgium. Italy, Switzerland, and Russia even less, the export to France have been nearly trebled, those to America nearly doubled, and to Suez and the Gulpha about three times as those of the previous season:

The following extract shews the light in which

India is regarded by Manchester :-

Perish India! England would not die! has been shouted in our ears. Was the man a lunatic who uttered the cry? Can any one calculate how much of our wealth is directly and in irectly caused by our intercourse with that land? Is it too much to suppose that were the flow of India'treasures and commodities to suddenly ceased that Manchess ter would become at the news a dead city? And Manchester dead, would England live? Let us suppose Russia's armies upon the Affghan hills, and 50,000,000 of India's sons in mutiny, and every bank in connection with India, in consequence closed. How many mills, how many warehouses and manufactories here would close also?

A telegram, dated Pera, the morning of the 25th ultimo, mentions that the following are understood to be among the Russian demands which Turkey has already consented to :-

Servia to get independence. Montenegro to have Antivari, part of Lake Scatari,

Nicsics, Spuz. Russia to hold Batoum, Kars, and Erzeroum, until an

idemnity of twenty million pounds is paid.

The Straits to be opened to Russian warships.

Bulgarian autonomy to be based more on the principle applied to Labanon than the programme adopted by the Conference.

Turkey to nominate a Christian Governor for a long term of years; such nomination, however, to be subject to

the approval of the Powers.

The new Governorship thus created not to include Thrace, but only te extend to the line of the Balkans. Part of the Russian army to embark at Constantinople,

where the final Treaty of Peace will probably be signed by the Grand Duke.

Vanity Fair writes regarding the present position

of England:

It is painful to speak the truth, it is base to disguise it. As pain is better than dishonor, it is necessary to say at once and openly that England is at this moment the laughingstock of all nations. Nine months ago it was not so. She was then the mightiest of all kingdoms, and it rested with her to say the word which should decide the fare of the world. She left it unspoken, and she is now like a man standing on the turret of the castle of his forefathers, looking on broad, nay, on boundless lands, which are nominally his, but which he has dealt with so recklessly that he can but wait in expectation for those to arrive who are already on their way to dispossess him.

A few months ago she was the strongest Power in the world, she is now one of the weakest; a few months ago she was chief and leader of all the Mussulmans, she has now, of her own act, without violence, without a sword drawn or shot fired without, a murmur of expostulation, descended

from that imperial position.

Further on it says:--To recapitulate. England has abdicated her position as a great Mussulman Power. The title of Empress of India now is not worth much more than was the title of Emperor of Delbi thirty years ago. This is the gossip of bazars and the talk of villages throughout India; and to save us from future danger we have such statesmen as Lord Derby for Foreign Affairs and Lord Salisbury and the Duke of Argyll for India, not to speak of Lord Carnarvon for the Cape of Good Hope.

When a hive of bees loses its queen, we are told an embryo of the working insects is selected, and fed on some special food, which has the property of converting its nature from the common to the royal species. Is there no mental food to develop seme man among us into a statesman? Even at this final moment something might yet be recovered, as the spendthrift mortgagor of his estates may yet preserve a a form or two to thrifty courses.

Vanity Fuir always takes a gloomy view of Eng-

land's position.

Midhat Pasha had an interview with Lord Salisbury on saturday, the 2nd instant, at which the relations existing between the Ameer of Affghanistan and the Russians were spoken of. Midhat Pasha is reported to have stated that the Envoys sent by Shere Ali to Constantinople two years ago, intimated a desire on the part of the Ameer to enter into an anti-British alliance with Russia in order to procure for Affghanistan an outlet to the sea.

The following short historical retrospect of the Indian Mussalmans, beginning with the downfall of the Mogul Empire, is given in a Turkish

Paper :--

It is well known that there are about 50 millions of Muhammadans in India, who formerly possessed a wealthy and powerful kingdom, governed by princes of the house of Timor. In the 9th century of the Hegira, the empire was broken up into a number of small States, each ruled by a member of the old Royal family. The result was the decay and downfall of the Mussalman dominion in India, just as happened in Andalusia when it was divided into small independent kingdoms. During this state of affairs, an ambassador from Malabar came to the Porte, in the year 950 Hegira (1433 A. D.), praying Sultan Suleiman Khan to assist the king of that country in ridding his land of the infidels, who had conquered a part of it. The Sultan consented, and sent back the a bassador with a force of janissaries under the command of Yusaf Beg and Hussain Beg, who cleared Malabar of the infidels and re-seated the king on his throne. Again, in 1190 Hegira (1773 A. D.) an embassy came from Sultan Ali Rija of Malabar, soliciting pecuniary assistance for the expenses of the war he had been waging for 40 years against the infidels supported by the English. The Porte. in reply, furnished him with a sum of money, apologising for its smallness on account of the war then going on with Austria. Similarly, seven years later, the Porte was obliged to deny aid to the envoy who came from Sultan Bibi to Abdul Hamid I. They say that this envoy brought splendid presents and asked the Porte to entrust his master with the Government of Baghdad, offering in exchange any portion of his territories which the Porte might choose. Lastly, in 1200 Hegira (1783 A. D.) a treaty was concluded between Tippoo Sultan and the Ottoman Government. Since -then, friendly intercourse has been stopped by the progress of English dominion in those parts, until its recent revival in so gratifying a manner.

The following extract from an article which appeared in a Turkish journal, will show how Turkish feeling has been embittered against England:-

After all its bluster, and display, and abusive langua ge, the English Government has apparently ended by telling the Porte that it had better come to direct terms with Russia regarding an armistice and the terms of peace. Thus we suddenly learn that up to this point, English interests are not endangered. The interests and responsibilities of a great Power are matters, no doubt, requiring the most intimate consideration, and not easily to be divined by an outsider. In fact, they are so subtle that the English Government has invariably contended itself with expressing its intention actively to intervene whenever they are threatened with stationing its fleet in Besika Bay, and publishing abroad its readiness for war; but it has never stated in what British interests consist. At first Russian aggression in Armenia was said to be prejudicial to British interests, but now that opinion has been completely abandoned. Again, since the fall of Plevna, and the starting of negotiations for an armistice or a peace, meetings have been held in London, and the English preparations for action have been so vaunted, that every one has been expecting a declaration of war against Russia. No sooner, however, was it known that the Russian Government had met these demonstrations by calling out two or three hundred thousand more men, than England at once advised the Porte to treat directly with her adversary. Probably we shall soon find that the conditions of peace contain some article which is really prejudicial to British intersts, and yet if it is accepted by the Powers and by the Porte, England will see her interest in agreeing with them, and thus choosing the lesser of two evils. We have already expressed our opinion that the more Russian interests are insisted upon, the further English interests will recede into the background, till at last they are confined to and bounded by the British Isles. The last arrow left in the quiver of English brag is the meeting of Parliament to-inorrow, when the policy of the Government will be finally determined. But we trust that henceforth the Ottoman Cabinet will adopt a line of its own, and will mind its own business, and not other people's.

The writer concludes the article with these words :--

As for England, we could fill a volume with our causes of complaint against her for advice which she ought to have supported, and promises which she ought to have kept. England has never been called to account for the way she carried Ahmad Khueus Effendi through India. like a man in custody, forbidding the people all intercourse and communion with him; yet his mission was undertaken partly at England's particular wish, and in order to obviate dangers threatening her policy. This alone may suffice as an example of the conduct of Turkey's friend, and as a precedent by which subsequent occurrences may be judged."

The humouristic journal Punch ridicules the war party in England. It caricatures this party as a donkey clad in a lion's skin. The cry 'I will go to war' issues from its mouth. But from the lion's skin protrude the donkey's head and ears. and the effect of its warlike shout fails entirely.

According to a letter in the Official Messenger the Emperor, at his second interview with Osman Pacha, asked him through M. Makeieff, the staff interpreter, with what particular aim he had en. deavoured to cut his way out. Osman answered that, as a soldier, he had felt bound to do his best. and that nothing remained to him but to try the chances of a sortie:-

'My attempt failed,' he is said to have added, 'but if anything could console me for my misfortune it would be the honour of being presented to your Majesty.' 'I' render full justice to your valour and your courage. rejoined the Emperor, though they were directed against my troops.' 'Sire,' replied Osman, bowing respectfully, I merely fulfilled my duty as soldier, and I was in hopes

not only that my own country would be grateful, but that I should gain your Majesty's approbation and esteem of your Majesty's army." 'Had you heard of taking of Vratsa, of Pravits and of Etroopol?' asked Emperor. 'I knew nothing about' it, said Osman. 'SI the unfortunate affair of Gorny Doubniak, no news reached Plevna for forty-five days.' 'Had you provision For five days only; on the eye of the attack they w all distributed to the troops.' 'As a proof of the admirat with which your courage has inspired me, I restore you yo sword, and you will continue to wear it when you get Russia, where I hope nothing will occur to displease yo After hearing this kind speech Osman Pacha, visi affected, left the Emperor's presence and went out, support by the same persons who conducted him thither. In courtyard the Turkish commander was offered a se on which he rested for a few minutes. Crowds of office surrounded him, while keeping at a respectful distant The generals engaged him in conversation. Gene Stein handed Osman Pacha his sword, and Colonel Kliv chareff presented to him a branch of myrtle as a sign th the captured army and its brave chief were no longer garded as enemies.

It may not be uninteresting at the present june ture of affairs between Greece and Turkey to know that, according to the law of 1878, voted lately by the Greek Chamber, the Greek army is now com posed of 24,000 men-16,288 infantry, 4,014 light infantry, 2,608 gendarmes, 552 cavalry, 2,013 ar tillery 1,107 sappers and miners, 300 attached to the hospitals, and a number of officers and ser geants on special service. The annual expense for the maintenance of the army is estimated at 2,000,000 francs.

News received by the Times of India, via Egyp after the last Mail left, says :--

A telegram to Egypt brought to us by the last mail states that Lord Beaconsfield will probably retire from the Government after the European Congress.

It is understood that Lord George Hamilton will succeed Sir Michael Hicks Beach in the Irish Secretaryship Mr. James Lowther, member for York, probably succeeding Lord George as Under Secretary for India.

A private telegram received in Calcutta fron Constantinople dated 23rd instant, states that the Grand Dake Nicholas will occupy Sanstefano, suburb of Constantinople, with troops to-morrow the 24th, and it is probable that peace will be signed there in a day or two. The terms are be lieved to be absolutely ruinous to Turkey. Sh surrenders to Russia Eastern Armenia, includin Batoum and Kars. The telegram further state that Russia demands six ironclads, but the Port refuses to give them, and threatens to sink then if the demand is insisted on. Constantinople virtually in the occupation of Russia; and i is believed by those on the spot who are wel qualified to judge, that a serious blow has been struck at British influence and interests in the East. It would appear, however, from Reuter's latest telegrams, that the demand for the ironclands has been waived.

We learn from the English papers that t Turkestan Gazette gives particulars of the captai of Kashgar by the Chinese on Dec. 17. The sovereign of Kashgar, Beg-Kouli-Beg, had take. flight, and his place of refuge was not known but his wives had sought safety at the fort of Na ryusk, in Russian territory. Two thousand Ma homedans, "flying from the sanguinary vengeand of the Chinese," had also sought refuge in th' fort. Among them were five Turks, who h been sent to Yakoub Beg as instructors of troop On entering Russian territory the fugitives well at once disarmed, and were afterwards sent, un der escort, to Tokmak. The Chinese advanced rapidly from Manas and Ourountchi and ccoupied, almost without opposition, the whole of the Diityschar district. Several towns, Khotan among others, themselves asked for Chinese garrisons.

One of the latest inventions is called the electros cope, the inventor of which declares that he able to transmit waves of light by electricity, which combined with a telephone, will enable people to see each other whilst they are carrying on a con versation any distance apart.

Orders have been passed by the Comernment of India for a sight alteration in one of the Telegraphic Departments by which a limit of 200 words has been assigned to single telegrams; this limit is to be raised for press telegrams to 500 words.

We understand that the Secretary of State h sanctioned the revised estimates amounting h Rs. 1,93,14,793 for the Northern Bengal Stat Railway, being an average rate of Rs. 80,144 per mile for 241 miles. The main line North o the Ganges is metre gauge, while the section Souti of the river is to be constructed on the 5 feet inch gauge, and will probably have to be worke by the Eastern Bengal Company.

Vanity Fair states that Mr. Oliphant was dis missed in consequence of "his having demons trated, in a series of brilliant and conclusive wri tings, the injustice of the refusal by the India; Government to restore the Berars. To invoke at old treaty made in the time when any European could be transported from Calcutta at the will c the East India Company, as a justification fo this act, is only to make its tyranny more apparent and t is to be hoped the will not by

ie Madras Chamber of Commerce has presena memorial to the local Government against proposed tax on trades and professions.

contemporary tells us that during the Viceroy's at Barrackpur last week, a meeting, composed he Hou'ble A. Eden, Sir J. Strachey, Sir E. Bayley, Sir A. Arbuthnot, Mr. S. C. Bayley Mr J. O' Kinealy, assembled to discuss a scheme for a native civil service.

he Palt Mall Gazette contains the following

gram from Berlin :-

he differences which have arisen between Auatria Russia are said to be of a very serious character, serious, indeed, that the German Emperror, anxious nediate, has felt constrained, it is said, to interpose person, appealing himself to the Czar and to the peror Francis Joseph, and reminding them of the ciples upon which the three Emperors' Alliance formed, and entreating them not to break up that ince. While perfectly friendly to Russia, the German vernment is understood to be supporting Austrian

The London correspondent of the Indian Daily

ws says :--

The suit of the Earl of Aylesford for a divorce from wife, by reason of her elopement with the Mars of Balandford, during the time when her husband with the Prince of Wales in Innia, has been bee the Court of divorce this week". The suit is said be practically an undefended one.

In the House of Commons, Mr. Chaplin asked e Under Secretary of State for India whether it is true that Mr. Oliphant, Private Secretary to r Salar Jung, was summarily dismissed by order the Indian Government, in opposition to the ishes of Sir Salar Jung; and, if so, whether he ould state to the House the reasons for that course proceeding, and would lay upon the table the pers and correspondence relating to his dismissal.

ord G. Hamilton in reply said :-

By a well-known treaty, negotiated in 1998, between e British Government and the Government of the zum, no Europeau is permitted to enter into the serce of the Nizam or to remain in Hyderabad territory cept which the consent of the British Government. bject to these provisions, Mr. Oliphant became somene back Sir Salar Jung's Secretary. The Governof India, having recently reason to believe that . Oliphant's presence at Hyderabad was not concive to a good understanding between the two Governents, considered it necessary to withdraw the sanc ion preously given to his employment. The Secretary of State es not consider this a matter upon which with advantage public interests papers could be laid upon the table of e House. (Hear, hear.)

Eather Lafont will deliver a lecture this eveng at the Science Association on the subject of Singing flames and Human ear," Dr. Mohendra al Sarker will also give a lecture on "Induction ad Distribution of Electricity, Power of Points, id the Electric Machine" next Saturday at

Nothing (says the Pioneer) gives such a clear idea the scarcity of fodder in the North-West Provinces an seeing all the commoner trees, far and wide, apped of their leaves and bare as if from a hailrm. The peepul have been cleared of every if, and in many instances mangoes have not aped. Every conceivable thing that can be lised as fodder is brought into market, even the id leaves of the frost bitten arhar, and the cultitor carefully thins his field of all the plants likely be unproductive of grain, even if he stays his and at these. Grass is at famine prices, a miserable andful fetching two annas, and at Makanpur Horse air a bundle, ordinarily obtainable for the same im, could not be purchased under eight annas.

The whole of Melbonrne is in a ferment. The Telbonrne Indian Daily News correspondent writes:-Commencement of the Revolution-Dismissal of the Judges_Removal from Office of all Police Magistrates_ Dismissal of all Coroners-Discharge of the Civil

Servants.

These five headings, in the columns of our local press. rected the eye of the Melbourne reading public on the norning of the 9th instant. The sceptical regarded the thole thing as a joke, instead of a stern reality which it ventually proved to be, for on turning to the Gazette Extraordinary, there, sure enough, were recounted the hanges which the Berry Government had determined pon making. Fery briefly let me tell you now this has il come about. The Ministry of the day have been heckmated by the Council refusing to pass a vote for he payment to members, and also of the Appropriation Bill, in which the payment to members was provided for. irritated to the last degree, and after resorting to all nanner of dodges, whereby their machinations might ot be frustrated, this expedient has been resorted to. whereby the force of the iron hand may be best shown. All has been done under the hand and seal of the Governor in Council. A harsh injustice has been inflicted apon a host of employes, and positive ruin to many and rremediable mischief to the colony must necessarily enue upon such a wanton art of barbarism. The object an only be to place in office the tools of the Governnent, who will exert every influence in the country to trengthen the hands of the Government in doing its dirty work. It remains to be seen what effect it will really have. To carry the scheme only one step further, the police will be dishanded, and the jails set free. Law and order will no longer prevail. The liberty of the subject is afe to be invaded, and the rights of property will no longer be regarded as sacred. How it will all end God only knows. And where, for some days after this Gazette unouncement, was His Excellency Sir George Bowen. he Governor of this colony of Victoria? Within an tour or two of his signature being given to the warrants, rdering the immediate dismissal of hundreds of Governtent employes, he dimensel to take part ostensibly in order. He dan not opening of a

presence might have been found most necessary, in view of political complications which do not yet even approach a settlement.

The Indian Daily News has the following regarding the new Pope-"His Holiness Leo XIII. is apparently little known on this side of the world. All that we can gather of him is that he was patron of the Church of St. Chrysostom and Bishop of Perugia, and that as Lord Chamberlian to Pio Nono, all the administrative functions were vested in him during the conclave following on the late Pope'a death. His Holiness is said to be about seventy years of age."

The Mussurie correspondent of the Delhi Gazette says:- "The Mussulmansaver that an alliance between the Russians and Turks is as improbable and impossible as to amalgamate oil with water. They do not believe it. A gentleman who has just returned here from the Madras Presidency declares, that the whole body of Mussulmans there are furious with the English for not assistanting the Turks against the Russians. I verily believe the same feeling exists amongst the Mehomedans in the Bengal Presidency."

Great changes are likely to be made soon in the goverement of the French possessions in India. It is expected that the Governor, M. Trillard, will be recalled, and rumour at Pondicheri has it that he has already asked for permission to retire in anticipation of his re-call. The Commissaire of Marine, M. De Possel Deydier, has been transferred to Cochin China, on account of his opposition to the republican candidate at the late election.

Russia evidently has an eye to the effectual defence by torpedoes of whatever new naval stations she may become possesed; for the Times tells us that she has entered into a contract for the supply of a hundred torpedo boats, to be built on the plan of Yarrow and Co.'s fastest boats, with the two leading ship building firms of St. Petersburgh. Fifty of the boats were to be completed within six months, and arrangements have already been made for transporting them by rail in pieces from St. Petersburgh to Odessa.

Kabul has this year been visited with exceptionally heavy falls of snow. In many places the streets were impassable, and the houses blocked up to such an extent that the inhabitants could only enter and leave them through the roof. Considerable loss of property in cattle and goods has occurred. Great distress is also reported to prevail in the districts of Hazara and Ghaznee owing to the severity of the winter.

The petition to Parliament against the License Tax has now been signed, we hear, by the representatives of every mercantile firm in Bombay, Mr. Donald Graham leading for Messrs. W. and A. Graham and Co., and Mr. Hamilton Maxwell following for Messrs. W. Nicol and Co.

It is said that instructions have lately been issued by the India Government to all local Governments and Administrations to submit to the Supreme Government before the month of August in each year the lists of European or American newspapers and periodicals required by them for the ensuing year.

The Royal Musical Academy of Stockholm has lately forwarded to Dr. Sourindro Mohun Tagore a gold medal, "as an expression of gratitude," for the interesting collection of Hindoo musical instruments and publications which that doctor had some time before presented to the academy.

It has recently been ruled that the Chief Commissionership of the Andaman and Nicobar Islands is not to be considered a local Government, for the purposes of the Civil Pension, Leave, and the Acting Allowance Code.

The following is the telegraphic summary of the week:-

London, 19th February. The British Iron-clad Squadron has gone from Mudania to Touzla.

Berlin, 19th February. In to-day's sitting of the German Parliament, Prince Bismark made a speech, during which he expressed his disbelief in the likelihood of a general European war arising from the Eastern Question. There was nothing, he said, in the peace conditions which had changed the attitude of Germany.

Germany will not interfere, but is willing to mediate, and cannot favor an alliance of Germaay, Austria, and England against Russia. The meeting of the European Cogress is now certain.

Viena, 19th February. In the Austrian Chamber of Deputies to-day, the President of the Austrian Council of Ministers declared that Austria would preserve the interests of the Austro-Hungarian Monarchy, and would object to any shifting of the balance of the power in Europe.

London, 20th February. The negotiations are still proceeding between England and Russia respecting the proposed Russian occupation of Gallipoli. Government will make a statement on the subject to-morrow.

Rome, 20th February. minul Pecei, an Italian, has been elected pope by the conclave of Cardinals in succession to Pius Ninth. Tho new Pope has assumed the tittle of Leo Thirteeuth.

Constantinople, 20th February. Server Pacha, the Minister of Foreign Affairs, has tendered his resignation, which the Sultan has accepted.

London, 21st February. In the House of Commons to-night Sir Stafford Northcote, replying to a question respecting the proposed occapation of Gallipoli by the Russians, said that the result of the negotiations was that Russia had undertaken not to occupy Gallipoli, Bulair lines, or the Asiatic side of the Dardanelles, and England on her part undertakes not to land troops there.

Sir Stafford said it was probable that additional navy

estimates would not now be required.

In the House of Lords, Lord Derby, replying to a question, said that the obstacles which threatened the meeting of the European Conference at Baden-Baden had now been removed, and that it would assemble in about a fortnight.

The House of Lords passed the bill for a suplementary vote of six millions. Lord Beaconsfield said that the money was required, because all Europe was armed to the teeth.

London, 21st February. The army estimates for 1877-78 amount to sixteen millions, being an increase of 490,000 pounds over those for 1876-77, the increase being chiefly devoted to war material for the army. Auxiliary forces are set down at 625,199 pounds.

London, 22nd February. Several of the London papers assert that the Porte refuses to adhere to the peace conditions including the surrender of the Turkish fleet.

The Russians have occupied Rustchuk. The Turks have evacuated Erzeroum.

London, Feb. 23. Rassia demands from Turkey the cession of a portion of the Turkish Fleet, but the porte has dissented and states that it will prefer to destroy the Fleet. The peace conditions are not yet signed. If the signature is delayed the occupation of the Constantinople by the Russians is expected.

London, Feb. 24. The Russian Government has withdrawn the demand made in the peace conditions for the cession of a portion of the Turkish Ironclad Squadron to Russia, the Porte engaging not to cede the Fleet to England. The Grand Duke Nicholas and Safvet Pacha will meet to-morrow at Sanstefano, when the conclusion of the treaty of peace will follow.

London, Feb. 24. The Russian Headquarters has been transferred to on the east cost of Roumelia, slightly San Stephanos morth of Midia.

London, 24th February. The Russians have occupied Pirot and Akpalauka. The Servians have protested, and are retreating ou Nisch.

The following are the fresh Russian peace conditions. The Bulgarian Tributary State to extend from the Danube to the Balkans, and from the Black Sea to the Servian frontier, and will comprise the valley of the Maritza, Adrianople excepted, and the greater part of Thrace and Macedonia.

A Russian Commission will be appointed to superintend the Bulgarian State for two years, whilst 50,000 Russian troops will occupy it for the same period-

Servia and Montenegro will be augmented. As regards Roumania, Russia is authorized to give her the Dobrudscha instead of Bessarabia.

The passage of the Dardanelles is to be prohibited to all war vessels, but free navigation is accorded to merchant vessels even in war time.

The indemnity demanded by Russia is fourteen hundred millions of roubles, or about £200,200,000, to cover which Turkey cedes six iron-clads, Kars, Batoum, Bayazid, and Ardshan, and the territory comprised, and pays forty millions sterling in bonds and eighty-one millions in a sinking fund, the interest of which is guaranteed, to Russia by the tribute payable to the Porte by Bulgaria and Egypt. Russia also receives the tribute paid by Bulgaria and

Egypt to the Porte, besides other minor payments.

London 25th February. A large meeting was held in Hyde Park yesterday by the party in favor of peace which was however scattered by an immense counter demonstration supporting the Government against Russia. The Majority of the London papers regard the Rus-

sian peace conditions as excessive and state that they will imperil the maintenance of European peace. The Grand Duke Nicholas with two regiments has ar-

rived at San Stafanos which the Turks have evacuated. A Russian division has Tchelonned Tehekmedji and Sen Stefanos.

Austria is increasing her armaments.

London, 26th February, 1878. Prince Gortschakoff is ill.

Lord Lyons the British Ambassador at Paris, will represent England at the coming conference.

In the House of Lords last night, Lord Derby, replying to a question respecting the revised peace conditions, said that the Government had received no information, confirming the peace conditions which had been published, but that if it was true that Russia demanded the tribute paid by Egypt to the Porte, that matter would require England's serious consideration.

A report is generally current, which states that Prince Charles of Roumania, will abdicate, if Russia persists in her claim to Bessarabia.

London, 26th February. In the Commons Mr. Gathorne Hardy, replying to a question, said that negotiations were proceeding between the India Office and the War Office, for the supply of seasoned seldier for India.

The treaty of peace between Russia and Turkey is not

yet signed. The question as to whether the cession of six Turkish Ironclads to Russia be included in the peace conditions, is not yet settled.

Vienna, 26th February. The Hustro-Huniga Govanerument has decided to ask. or a credit of six millions sterling for military preparationsr

Printed and published by C. N. Roy No. 2 Ananda Chatteriese Lane, Bagbazar, Colcutta,

—বংসর বংসর এক্সচেঞ্রের (বাটা) দারা ভারতবর্ধের বিশুর অর্থ
নষ্ট হয় ইয়া বোধ হয় সকলেই জানেন। এই অর্থ বায় অনিবার্য কি
ইয়া নিবারণ করাব কোন উপায় আছে তায়া অনুসন্ধানের নিমিত্ত
একটী কমিশন নিয়ুক্ত হইবে । এই কমিশনটী দ্বারা যে আমাদের
তি ভিন্ন কোন উপকার ইয়বে না তায়া আমরা পূর্বাফুেই বলিতে
পারি। এক্সেচেঞ্জের দ্বারা যে অর্থ নস্ট হয় তায়া গবর্ণমেন্টের কর্তৃপক্ষীয়দিগের নিজ ভাণ্ডারে গমন না করুক, তায়াদের আলীয় য়জনের
ভাণ্ডারে গমন করে, উয়া নিবারণ করিয়া রাজভাণ্ডারের অর্থ সঞ্চয়
করা ইংলিশ রাজ্যের ধর্ম নয়। এই কমিশনের ফল ইয়াই হয়বে যে
এই উপলক্ষে কতকগুলি টাকা জন কয়েরক ইংরাজদিগকে দেওয়া
ছয়বে।

= শালাজ হইতে ডাজার বিডি সাত প্রকারের কৃষিজাত দ্রব্য পারিসের মেলাতে প্রেরণ করিতেছেন।

ত্তারতবর্ষের মধ্য প্রদেশে গোধুম আবাদের বিস্তর ক্ষতি হইথাছে। এ বংদর সর্বাত্ত হেরপ সন্ধাদ আসিতেছে এবং
বাস্থলার শন্য যেরূপ ছুমূর্ল্য হইতেছে, তাহাতে লোকের এবার সম্ভবতঃ
অতিশয় কপ্ত হইবে। এই কপ্তের উপর আবার লাইসেন্স ট্যাক্সের
অত্যাচার।

= সম্প্রতি সাপ্রিতে যে যুদ্ধ হয় তাহাতে ইংরাজ সৈনোরা বিপক্ষদের নয় জন হত, ও সাত জন আহত, এবং ছয় জনকে বন্দী করিয়াছে।

— এই मचामि मचाम পত্ৰ সকলে প্ৰকাশিত হইয়াছে। আগামী
নবেষরে লণ্ডনের ইণ্ডিয়া আফিসে একটা পরীক্ষা হইবে। এই পরীক্ষা
ভারা পাঁচ জন যুবা নির্বাহিত হইবে এবং ভারতবর্ষের বনরক্ষার কার্য্যে
ইহাদিগকে শিক্ষা দেওয়া হইবে। এই শিক্ষা প্রাপ্ত হইবার জন্যে ইহারা
ফ্রান্সে প্রেরিত হইবে। দিবিল সরবিসের লোক বিলাত হইতে আসিবে,
সেডিকল সার্বিসের লোক, মিলটরি সারবিসের লোক, সিবিল এঞ্জিনিয়ারিং, ফরেষ্ট প্রভৃতি সমুদয় লোক বিলাত হইতে আসিবে, এবং ইহার
জন্যে যত বায় বৃদ্ধি হইবে, তাহার কতকাংশ যাহাদের আট টাকা
মাসিক আয় তাহাদের সক্ষুলান করিতে হইবে। এরূপ অবিচার
ইংরাজেরা অনায়াসে জীর্ণ করেন।

ভ্রেরত

শিক্ষা বিভাগ।

মহাশয়, আমার কোন আত্মীয় শিক্ষা বিভাগে কার্য্য করেন, তাঁহার ঘনিষ্ঠতায় এ বিভাগে সংক্রান্ত নানা বিষয়ের আলোচনা শ্রবণ করিতে পাই। আমার মনের স্বাভাবিক গতিও শিক্ষা বিভাগের প্রতিবেশী, এ জন্য এ বিভাগের বিষয় অনেক সময় চিন্তা করিয়া থাকি। আমার চিন্তিত কয়েকটী বিষয় সাধারণ সমীপে প্রকাশ করিতে বড়ই হিছো, আপনকার পত্রিকায় তৎসমুদয় প্রকটিত করিলে অত্নগৃহীত বোধ করিব।

১। कर्माना नियाग -। গ্রণ্মেণ্ট শিক্ষাবিভাগের ডিরেক্টরের পদে ও কলেজের অধ্যাপকের পদে ইংরাজ নিয়োগ করেন, তাহাতে তত ক্ষতি হয় না; প্রত্যুতঃ অধ্যাপক ইংলভের বিশ্ব-বিদ্যালয়ের স্থশিকিত वाकि इन इंश कडक थार्नीय। किन्न कृ न इनिय्लिक्ट त्रव शप वाकानि ভিন্ন অন্য কেহ নিযুক্ত হন, ইহা বড় অসঙ্গত। স্বল পাঠশালা দেখিয়া विषान छाञात প্রধান কর্ত্রা কর্ম; ५४००५ क्रून পাঠশালা বঙ্গভাষার; किन्त जिनि वोञ्चाल। जारनन ना, পরীক্ষার সময় অবশাই তাঁহাকে পরের মুখে ঝাল খাইতে হয়। সাহিত্যের ত কথাই নাই, অঙ্ক ভূগোলের পরীক্ষা করাও তাঁহার পক্ষে স্থ্যাধ্য নহে। মনে করিলে এমত করিয়া ছাত্রদিগকে বলিয়া দিতে পারা যায়, যে তিনি তাহার কিছুই টের-পাইতে পারেন না। তিনি মফঃশ্বলে যাইয়া পরীক্ষা করাতে যে ফল, আর হেডকোয়াটারে বিসিয়া ডেপুটী ও সব ইনিস্পেক্টদিগের রিপোর্ট পড়িয়া স্লের অবস্থা বুঝিতে চেষ্টা করাতে ও দেই ফল। তবে তাঁহার এত খরচ করিয়া মফঃদলে স্কুল দেখিতে যাইবার ফল কি? ইহা निठां अविष्यना गांव। आमांन उ डेकिन भांकादिता अपनक व्याहेगा मिन, প্রতিযোগী পক্ষ থাকাতে কেহ কিছু ঢাকাইতে পারে না; আপীল, ा वाभीलित उभन वाभील बाहि, डाहाट बदनक तक । हम ; है आ किता धर्माधिक तथ विमिया या এक ध्वकांत्र कांचा ठालाई एक शादान, जारांत कात्र । छेश है। किन्न भूती काञ्चल छेकिन स्थाना ते नाहे। अयः ध्यन छिन 🛴 अथि । मिरे जायात विमानियत शतीक्क, এ य कि ज्यानक वाशित ভাহা আমাদের শাসনকর্তারা ব্ঝিতে পারেন না, অথবা ব্ঝিলে वार्थशनि इग्र।

গ্রন্মেট অন্য বিভাগে যাহা করেন, তাহাতে তত ছংখ হয় না! ভগ্রতী ভারতীর পূণ্য বিভাগে কোন অবিচারের কার্য্য ঘটলে বড় কষ্ট ও ক্ষতি হয়। আমার্চের হিতৈষী সহাত্রভারক লেঃ গ্রণ্র সাহেব এক-

বার এবিষয় বিবেচনা করিলেই চরিতার্থ হইব তিনি অনুধাবন করিলেই কেবল বাঙ্গালিদিগকে স্বল ইনিস্পেক্টরের পদে নিযুক্ত করিবার বিধি বিধান করিবেন।

২। শিক্ষাবিভাগের নিয়ত্র কর্মচারীদিগের পদোরতি। আবার दलि, भूनः भूनः वलि, मत्रयोत्र भूग्धाम अविष्ठात्त अत्यधीकृञ হইলে বড় মর্মান্তিক কষ্ট ও গুরুতর ক্ষতি হয়। জেলার সমস্ত শিক্ষা-कर्षाना माजिए द्विरहेत कथीन, प्राप्त करनक काला अ कारनक माजिए दे । यिन धकरी छेन्नि जित्र अन थानि इहेन, जिन्न जिन्न जिन्न मिनिष्टिर हो। वालन वालन थिय वाङिएनत जना छेलरताथ कतिरलन, এक এक जन इनिएलकुरत्तत कठक छलि कतियां जिला; इनिएलक् ऐरत्त मःथा उ ८। १ ही। छांशां अधिय अधीनगण्य जना ल्यांनी हालन क्रिल्न, किंख लांक य य প्रकृतिज्ञ पिनिञ्च श्रकात्त्र छे श्रातां कतियां थाकिन; কেহ প্রকৃতি উপযুক্ত রূপে কেহ বা বাড়াইয়া উপরোধ করিয়া থাকেন, কেহ বা অতি কুপণ ভাবে বাক্য ব্যয় করিয়া থাকেন। কাহারও কাহা-त्र श्रञात, यथन यांशत विषय लिथियन जथनहे हिन्दू भाष्त्रकाति पत्र দেবস্তোত রচনার ন্যায় লেখনীকে অবসন্ন করিয়া ছাড়িয়া দিবেন, षष्ठी मां कालकि अ बक्ता विकृ महिशंदित शिञा शिञाम कि तिया जू लिया। यिन वाखिवक এक्राथ इंडेल, তবে एक नाना कर्मां होती व छे थरताथ अब পাঠ করিয়া তাহার উৎকর্ষ অনুসারে উন্নতিপ্রার্থী দিগের মধ্য হইতে প্রকৃত ভাগাবান বাচিয়া লওয়া । মহুষোর অসাধা। কিন্তু আমাদের অলৌকিক ডিরেকটর সাহেব তাহা করিতে পারেন। তিনি কলিকাতা इड्रेंड वड़ नढ़िन ना ; आंगांत दोंध इय़, अछड़ वंदमदत अक वात कतिया, डांशत প্রত্যেক জিলা বেড়ান উচিত, এবং ভাঁशत হাতে যাহা-দের উন্নতি নির্ভর করিতেছে সেই সকল অপেক্ষাকৃত উচ্চপদস্থ কর্মচারী দিগের গুণাগুণ ক্ষমতা সাক্ষাৎ পরিচয় দারা জানিয়া রাখা উচিত। নচেৎ এমত ব্যবস্থা করা উচিত, যাহারা সাক্ষাৎ গুণাগুণ জানিতেছেন, তাঁহা-দেরই হাতে সেই অধীন ব্যক্তিদিগের উন্নতির চুড়ান্ত উপায় থাকে। এক এক বিভাগের ইনস্পেকটরেরা স্ব স্ব বিভাগের উন্নতি প্রদানের সম্পূর্ণ क्रमठ। পाইলে वड़ গোল হইতে পারে ना।

ওরূপ নিয়ম না থাকাতে উপযুক্ত পাত্রের উন্নতির ব্যাঘাত হইতেছে তাহাতে স্বতরাং নানা প্রকার অনিষ্ট ঘটিতেছে। সম্প্রতি এতদ্বিষয়ক একটা অতি অল্ল দিনের ঘটনা বিবৃত করিতেছি।

মাসাবধি হইল, আমাদের পরম শ্রদ্ধান্দ ও পরমানন্দ মৃথোপাধ্যায় মহাশ্রের শোচনীয় মৃত্যুতে২০০ টাকার একটা ডেঃ ইনিস্পেকটরী
খালি হয়। দেশ শুদ্ধ লোক মনে করিয়াছিল সেকেণ্ড গ্রেডের সিনিয়ার
শ্রীযুক্ত চারুচন্দ্র চটোপাধ্যায় উহা নিশ্চয় পাইবেন। শ্রীযুক্ত রাজকৃষ্ণ
রায় চৌধরী উহা পাইয়াছেন; তিনি অযোগ্য পাত্র বলিতেছি না। কিন্তু
চারু বাবু রাজকৃষ্ণ বাবুর বহুদিন পূর্ব্ব হইতে ২৫০ টাকা পাইয়াছেন;
স্বর্গীয় মহাচেতা আর, এল, মার্টিন সাহেব তাহাকে বহু পূর্ব্বে ২০০ টাকার
পদ পাইবার যোগ্য স্থির করেন, কিন্তু তৎকালে তাহা দিবার উপায়
না পাওয়াতে অন্য প্রকার পুরক্ষত করিয়া তাহার বাটা হেড কোয়াটার
করিয়া দেন।

কিন্তু আমরা আশ্চর্ষ্য হইতেছি, তিনি সিবিল লিষ্টিতে উচ্চতর স্থানে থাকিয়াও উন্নতিতে বঞ্চিত হইলেন; আরও আশ্চর্ষ্যের বিষয় এই, শুনিতে পাই আমাদের ডিরেকটর সাহেব বড় তেজিম্ব প্রকৃতির লোক; তথাপি তাহার হাতে এই ঘোরতর অবিচার হইয়া গেল।

আমরা প্রসঙ্গতঃ আর একবার এক ব্যক্তির কথা উল্লেখ না করিয়া ক্ষান্ত হইতে পারিতেছি না। বাকুণ্ডা জেলার কুচিয়াকোল ইংরাজী স্কৃল বা রাধাবল্লভদ ইনষ্টিটিউশন অনেকের পরিচিত; হেড মাষ্টার শীযুক্ত বাবু কেশবচন্দ্র মিত্র মহাশয়ের প্রতিও ডিরেকটর সাহেবের কুপাদৃষ্টি করা উচিত। এ বংসর হনি ১৪জন ছাত্র টেপ্ত একজামিনে ব'াচিয়াছিলেন, অষ্টম নবম ও ঘাদশ ছাত্র, পাছে তৃতীয় বিভাগে পাস হইয়া ওকালতী পরীক্ষা দিতে না পায়, এ জন্য ইচ্ছা পূর্বেক পরীক্ষা দেয় নাই। তাহার বাছা চতুর্দশ ছাত্র ষথন পাদ হইল তথন গেলে ১৪ জনই পাদ হইত সন্দেহ নাই। কেবল ১১ জন পরীক্ষা দেয়; ১১ জনই পাদ হয়। উহাদের এক জন প্রথম বিভাগে, ৬ জন দ্বিতীয় ও ৪ জন তৃতীয় বিভাগে উত্তীর্ণ হইয়াছে। মকঃস্বল স্কুল বিশেষ বাকুণ্ডা জেলার মকঃস্বল, ছাত্রেরা আর কাহারও সাহায্য পায় না, সেখান হইতে এরূপ স্ক্ষল উৎপাদন করা সামান্য গুণের কথা নহে। কেশব বাবু যেমন বিদ্বান তেমনি পরিশ্রমী, তেমনী শ্রম করাইতে সক্ষন।

অসাধারণ গুণশালী শিক্ষকের পুরস্কারের স্বরপ তাঁহাকে কোন প্রধান জেলা কলে হেড মাষ্টার করিয়া নেওয়া উচিত।

बीभः=

আবগারী ডিষ্টিলারী।

মহাশয় শুনিতেছি আগামী এপ্রেল মাস হইতে আবগারীর ডিষ্টিলারি এবালিশ হইয়া সকল জিলায়ই বাহের ভাটীর বন্দোবস্ত করিতে গবর্ণমেণ্ট ইচ্ছা করিয়াছেন।এই জন্য জেলার হাকিমদের রায়ও গবর্ণমেণ্ট তলব করিয়াছেন। বাস্তবিক তাহা হইলে গবর্ণমেণ্ট এক্ষণ অপেক্ষা মাদক প্রব্যের আরো বৃদ্ধি করিবেন। মদও স্থলভ হইবেক কাজে কাজেই এক্ষণ যাহারা পরসার মমতায় খাইতে না শিথিয়াছে, পরে মদের মূল্য হাস হইলে অনেকেই শিথিতে অভ্যাস করিবেক, বিশেষতঃ বাহের ভাটীর ব্রন্দোবস্ত হইলে কত লোকের যে অন্ধ মারা যাইবেক বলা সায়

না। অতএব মহাশয় এই সংবাদটী সতা কি মিথা। মহাশয়ের বিখাতি পতিকায় প্রকাশিত হইলে বাধিত হইব।

> बीश्र्विक (याम, गगती, मूस्म्त ।

বশ্বদ

शब (अंतरकत अर्डि।

প্রীআশুতোষ পাল—বর্দ্ধনানাধিপতি, নিতি উত্তরপাড়া বিজ্ঞান মিহির সাধানণ পুস্তকালয়ে বিংশতি বাঙ্গালা পুস্তক দান করাতে ভাঁহার নিকট কুতজ্ঞতা স্বীকার করিয়াছেন।

শ্রীসতা স্কল —আপনার পত্র খানি পাঠ করিয়া ছঃখিত হইলাম।
আপনি যাহা লিখিয়াছেন তাহা সম্পূর্ণ সতা হইতে পাবে, কিন্তু বিশেষ
প্রমাণ বাতীত আমরা উহা প্রকাশ করিতে পারি না। যাহার পক্ষে
আপনি লিখিয়াছেন তিনি যখন আদালতে শান্তি পাইয়াছেন, তখন
নির্দ্দোষী হইলেও সাধারণে তাহাকে দোষী বলিয়া গণা করিবে। যদি
তিনি নির্দ্দোষী হন তাহা হইলে গ্রামস্থ তদ্ম লোকে একত্রিত হইষা
তাহার মৃক্তির জনো গ্রন্থেন্টে আবেদন করিলে তাহার বিশেষ
উপকার হইবার সম্ভাবনা।

बी, वर्कमान—आशनाज ভাবার্থ কিছুই ব্ঝিতে পাবিলাম ना।

শী উ, নবাবগঞ্জ—গর্দান ও হমুগানে প্রভেদ কি ? কিছু দিন হইল এক ব্যক্তি নবাবগঞ্জ হিতৈষিণী সভাব কোন সভাকে গর্দান বলেন। পত্র প্রেরক ভাহাকে কদলী ফল ভক্ষণ ও ত্রেভাযুণের কথা শ্বরণ করিতে বলিয়াছেন। ইহাদের মধ্যে কাহার জিত ও কাহার হারি হইল পাঠকগণ ভাহার বিচার ককন।

প্রীজয়নারায়ণ দাস—ইনি কতকগুলি ধান্য আগাদিগকে উপহার দিয়াছেন। ইহার কোনটাতে ছইটা ও কোনটাতে তিনটা চাউল দেখা গেল। পত্র প্রেরক বলেন যে, যদি কেহ উহা স্বচক্ষে দেখিতে চাহেন তাহা হইলে তাঁহার নিকট এক আনার ডাক চিকিট পাঠাইয়া দিলে তিনি উহা পাঠাইয়া দিতে পারেন। পত্র প্রেরকের ঠিকানা, "দেশ হিতৈষিণী সভার সম্পাদক, থামারগাছি, মগরার ডাক ঘর।"

শীঃ—ডায়ামণ্ড হারবার, বাঁকিপুর থানার অন্তর্গত রিপ্লাবাদ গ্রামে অনুপযুক্ত ব্যক্তির হস্তে চৌকিদারী ট্যাম আদায়ের ভারার্পণ হওয়াতে প্রজাগণ কন্ত পাইতেছে।

জনৈক দর্শক—লিখিয়াছেন যে মেছপাড়া ও গোয়ালপাড়ার হুই প্রদিদ্ধ জনিদার বাব্ উদ্ধব রাম চৌধুরীর একটি পুত্রের জন্ম উপলক্ষ্ণে পনর দিন পর্যান্ত মহোৎদব হয়। এই উপলক্ষে আমোদ আফ্রাদ ও বিস্তর্দ দান ধান হইয়াছিল।

শ্রীগোকুল চন্দ্র দে = আপনাকে চিনিয়াছি। ওরূপ মিখ্যা সংবাদ প্রেব্ করিয়া আপনার নাম কল্ঞিত করিবেন না।

বোবার ভাই হাবা = আপনি যাহা লিথিয়াছেন তাহা ভ্রানক কাণ্ড বটে, কিন্তু যখন আপনি অপ্রকাশ্য থাকিতে ইচ্ছা করিয়াছেন তথন উহা আমরা প্রকাশ করিতে পারি না। যদি এ বিষয়ে কোন আন্দোলন করার ইচ্ছা থাকে তাহা হইলে আপনি আমাদের সহিত সাক্ষাৎ করিবেন।

ক্ষাচিৎ পাঠক, দাইহাট—এক বিষয় পুনঃ পুনঃ আলোচনা করিলে উহা সাধারণের অপ্রীতিকর হইয়া উঠে।

विकाशन॥

याधव त्याहिनी।

"গণনীয় নবনাগে সধ্যে গণনা করিতে সঙ্গতিত হুই না, "অমুত বাজার পত্রিকা।

ठल (तांशिनी।

সর্কা ছোষ্ঠ নবনাাস লেখকগণ এত দূর কৃতকার্থা হন নাই।।। মধাস্থ।

हीतांनांन नांठेक।

"আমাদের মতে ইহা এক খানি উংকুট নাটক হইষাছে।" অমৃত বাজার পতিকা।

शिंड পুস্ত কের মূলা > টাকা ডাক মাহল । याना।

(मिछिक) वमञ्जर।

(১) প্ৰথম গও হইতে ২৪ খণ্ড অবধি মূল্য ত টাকা ভাক মাজলাণ আনা।

लर्ड लिउटनत हिन्द भूना श्रक यांना एक मांश्रन श्रक यांना। शिकुक वांधाव दिन मृना श्रक यांना एक मांश्रन श्रक यांना।

" স্থান যন্ত্ৰ" ৩০৬ চিতপুর রোড কলিকাডা।

) शिवानकानाथवाद्यव (निक्रे थाथकः।

FOR SALE.

A Male Elephant height 9-1 aged about 20 years, is a fast goer and has splendid tusks. A female Elephant height 10-1 aged about 35 years. Apply to Ishan Chundra Mukherjee 85 Amherst Street.

भारा महा किनो ना हिक ।

विजीव मश्क्रत्।

পরিবর্ত্তিত ও সংশোধিত।

युवा ३० डाक्याञ्चल ।।

खिथान खिथान नकल श्रुकाल एवरे खोशेवा। "वञ छाषात প্রতি বৎসর এই রূপ এক খানি নাটক প্রকটিত श्हेल आगवा गांव পव नाहे मों जांगा विद्युजना कविव"

<u>—वाक्तवः,।</u>

इष्टिमात कार्यखरत दाता आमानिधात नाना श्रकात हिमिल्लाथि भ्युष्ठक ७ अवध याभियाह । याद्रामिणात यान्गाक इट्रेव भव लिथिल व्यविनाय श्रीश इंद्रावन। मूलाव छानिका यामारक निधितन পाठान खाইरव। निम्न निर्विष्ठ পুস্তুক ও देवध এখানে সর্কান বিক্রয়ার্জে প্রস্তুত वादक ।

বাঙ্গালা পুস্তক। আমার প্রণীত বাঙ্গালা

ट्यांटम ७ पिकि ९ मा विकान

व्यथम, विडीम, ज्डीम थल, व्यत्डाक थल

टिच्य जा जिंद्र अभ अ

यटा उनाष्ठेशंत विकिथमा व्यिष्टिमिन ६६ छ ७० मिनि

खनाएँ ठांत वाका = 8 मिनि

वे ३२ मिनि

अहे अला छेठाव चारक्र এक थानि পুস্ত क আছে ; ইहा निछा छ महज बान्नानाम निथिত এवः ইহার मাহাযো এই কঠিন পীড়া ইহার উপদর্গ ध्वरः পরবর্তী পীড়া সমূহ অতি সহজে আরোগ্য করা যায়। व. मगस जवा পाठाईएउ छाक माखन ७ भाकिः थ्वतः भृथक नागिता खीविश्रति लाल छाउँछी।

७८, कर्नश्राणिम द्वीं ।

30

(मवन कत्रिल वृत्थिएं शांतिद्वम।

"उनिक छ भ" ইহা द्वाता भूता जन खुत (विद्याय छः यालितिया) श्रीरां, यक्र , डेशनः भ अ थां के अ तक मश्कीय त्रमख भीड़ा, भित्र भीड़ा প্রভৃতি অতি স্বল্ল দিবস ব্যবহারে व्यादां गा क तिया, भंतीत बलकां तक क द्य। भूना श्राटाक निनि ठ होका भाकिः।० जाना।

"গলোরিয়া মিকাচর" ইহা দারা নৃতন ও পুরাতন মেহ রোগ এক বারে আরোগ্য হয়। মূল্য প্রত্যেক শিশি ३ छोका भाकिः।० याना।

আমাদিগের ঔষধিতে পারা ইত্যাদি কোন প্রকার यनिष्ठेकत थां जू नारी। यमाशि डाक्कत वा यना कान ख्यकांत्र ढिकिटिं किर मृंग ख्यतं करतम जारा रहेल होका छाडि /॰ धक बाना वाँहा महिङ भाठाई दिन। শিশির উপর প্রশংসা পতা সহ ব্যবহার প্রণালীর কাগজ (वष्टिंड थाकित्व।

> क्टिः प्रभः ভট्টाচাर्या एए काम्लानि (ङ शिष्टेम) (वनांत्रम।

वाजामध्या स्कल्यम छेवभ।

ভারতজাত দ্রব্য সংযোগে চিকিৎসাত্র সম্পাদক

দারা প্রস্তা।

नवज्ञत बकाख हुन।

७ भुतियांव भारिक । । जाना। जाक माञ्चल / । जाना। जीर्जन शीश्रात लोश।

३७ श्रुतियात शादक ॥० व्याना। जाक याञ्च ले वाना।

वावशा शव शांदक छित सद्धा थाकि द्व। २৮ नः ष्यभाव हि९श्रव (वांड, किनकांडा, हिकिৎमांडव कार्यालय लोशा।

Wanted for the Alipore Reformatory School.

1. Carpenter. 1. Blacksmith.

1. Tin Smith as trade instructor.

Applicants must be Natives of Bengal, wellconducted, and first class workmen. Apply personally to the Superintendent, Jail Manufactures, Alipore 1 @ 河 1

किनका का का निः ना है दिन्नी ७ २१ नः का नि ष्रे छिष्ठ यि फिरकन था अ अ न न न कि भिक्ति है बी एक था श्वा , बीथ्रयथ नाथ वस् थानी छ।

ष्यमत् निःश् नाहिक ... । ।। ष्यभूके विज्ञा निहिक

DR. H. GANGOOLY'S.

असृ उ दो जो त श जिकां।

SPECIFIC PILLS. (Infalliable cures)

Goncerhea and Gleet, chancre and other sores on the private parts and Lecorrhiea (the whites.) Each sort to be had in boves containing one dozen pills, price per box Rs. 2-8.

with postage Rs. 2 Ans. 12. Generally no second box will be required. Directions for use accompany each box. To be had only at No. 7 Bagbazar Calcutta.

विनी छ छ दिव मर्समाधा तथ कि निर्वित्तन क तिर्छि इ य व व ९ म व था यि यदनक न् उन शाष्ट्र कूल हे जा कि वृक्षि क विया ছि यथा ৫० तकरभव अकृ जिम आरमव कलम ১৫० तकरमव नृजन ত অধিকাংশ সুগন্ধমূক্ত গোলাগ, বাগান সাজাইবার অসীম वकरमव िवश्रीयो मूल, लंगी क्ला हैना देगा मि। इंशापत मूलात जानिका छुरे यानात हिकिहे भागिरेल छाकर्याल প্রেরিত হইবে। এই তালিকায় গাছের লাটিন ও বাঙ্গালা नाम किति हिश दिशाले ७ खेख क किति इस हे जा मि विविध विवत्न निधि जां छ।

धारे वर्भव नावमतित हाँमा लिलान होका इहेट তেরো টাকা করা হইয়াছে। এই রূপ ক্যানতে সাধা-त्रध्व विर्णिष स्विधि। इरेरव। इत्रभं क्रि स्विम् रिटेडिय-গণ এ দেশীের নারসরিটি যাহাতে বজার থাকে তৎপক্ষে विश्वि यञ्चान इरेदिन। छोठ्कशं अर्फिक मृना ७ अशद्त मल्पूर्व मृना श्रान क तिर्दा खिनिम ममञ्ज शाठीन यादे दि। धां इक शं शतक (म भी अ दिवां जी वीक वातम जून अ जू वां हे इटेट जानयन करिया (दाभन खनानी मत्यक भाषान इटेरव।

बीन् ठारगानान हर्षेनायाय পাইকপাড়া নর্সারি, কলিকাতা।

व्यक्तिक दिनाज, दिनाइक दिनाज्य दिनाज्य

शृतां जन ज्वत श्रां जन ज्ञा हे जा मि शीषात পরিক্ষীত অবার্থ মহৌষধ!!!

व्यर्ग मर्का थकारतत समया अवश् वावश् वावश् वावश् २२ मिवरमंत्र यूना ०५० এवर ७५०

उयिधित मृला यांत छाक्मा खल

थां जू पिर्विलात প্রতি বোতল এক সপ্তাহের ॥।। পালা এবং পুরাতন দ্বর খাতের ব্যামহ श्रतां जन या इंजा मित्र टेंजन

এই यहिंगिधि छिलि (य, वर्छ मःथाक मञ्जास वाङ्गिशं वाङ्गना, इंडेनानि छ इंश्राङ्गि हिक्टिमा क्रा-इया शीए। इरेड मुक रहेड ना शातिया शितिया वरे गरशेषधि (भवत्म व्यावशा लां करिया वामीग वानम डेशदङाश क्रित्डिक्न। वाद्वाशा मघाठात मकल (वासाई, लार्श्त ७ कलिकां जास मसाम शक मकरन थकानिङ इहेशार्ड वर श्रुककाकारत म् खिङ इहेशा विङ्यं काय्न श्राप्त श्राप्त ।

धाई गरशिष छिलिन इरकत कल ए गूल धार्त चाताम्र थाख्य। इश मिनत्न क्यान थाकात कमे नाई। (मवन नियम छेषधित महिङ পाङ्य। यात्र।

बीकताल ठब्स ठिए शाशाश अम् नश् यलका (लन (वल्वाकाद्त्र জ (नत क (नत शार्यंत शाल) किनिकां जा।

क्लड! येलाड।। वाजि म्लड!!!

बागता विनाउ इहेट बज्ज बग विविष्ठ लाए के, गटजल लाडांत वन्त्रक, तांत्रकल, शिखल, व नांगांट २० निल जिल्लावांत, वांकन,काांश, दहांहै। अ भीकाद्वत मकल श्रंकांत मत्रक्षम काकि सूल बूटला विक्यांदर्श व्यागनानि कतियाहि। योशत श्राजन इहरवक निम लिथि उद्यादन एक कहिएल शोहेदन । खांत वन्द्र-कामि मकल श्रेकात जास (यतायङ जिङ जूल्ड युक्त उ यहांकप्रदेश मन्नामिं इहेर्ड्ह ।

फिः धन् वियोग कार न ९ ७२ लालि पित्र प्राक्तिन ক্লিকাভা

Ven श्रुष्ठ अ

倒

এই পতিকা কলিকাতা, বাগৰাজার আনন্দ চন্দ্র ठाष्ट्रियात गालि २ नः वाणि इइट्ड थाडि इहल्लाडिवादत की हत्य नाथ दास छाउ। श्रास्ता किया क